www.thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः
राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका
सितम्बर 2013 मूल्य 15 रू.

# आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

## अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रुखनगर का छठा स्थापना दिवस समारोह

आश्रम के छठे स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर श्री वीरेन्द्र जी आर्य एवं श्री रामवीर जी, सरपंच ग्राम-दौलताबाद, गुड़गांव के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण करते हुए। साथ में खड़े हैं बाएं से श्री कन्हैया लाल जी आर्य, आचार्य राजहंस मैत्रेय जी, आचार्य बलदेव जी, वानप्रस्थी ईश मुनि जी, स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य सत्यवीर प्रेरक, स्वामी रामानन्द जी एवं शिव स्वामी जी।

आश्रम के छठे स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर श्री वीरेन्द्र जी आर्य एवं श्री रामवीर जी, सरपंच ग्राम-दौलताबाद, गुड़गांव को पुष्पमाला एवम् स्मृति चिन्ह से सम्मानित करते हुए स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य बलदेव जी, श्री चतुर्भुज जी बंसल।

www.thearyasamaj.org

ओ३म् ओ३म्

## आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

# आत्मशुद्धि पथ के नए संरक्षक सदस्य बनें

आप हरियाणा के सोनीपत जिले के विजाणा गांव में जन्मे आर्य संस्कृति के रक्षक वीर परोपकारी, दानी, निर्भीक, निडर और सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी नाहर सिंह (शेर सिंह) काद्यान के नाम से अलंकृत हैं। वर्तमान में आप विजवासन, दिल्ली में निवासरत हैं। भारतीय सेना, भारतीय बीमा निगम, कैनरा बैंक, दिल्ली पुलिस आदि विभागों में ईमानदारी, निष्ठा एवं अनुशासन पूर्वक अपनी सेवाएं प्रदान कर चुके हैं। वर्तमान में आप कस्टम विभाग में सुपरिन्टेडैंट पद पर दिल्ली एयरपोर्ट पर सेवारत हैं। सर्विस के साथ-साथ आप समाज सेवा को अपना धर्म मानते हैं। अभी आपने पाकिस्तान के दुर्व्यवहार से पीड़ित होकर आये 145 हिन्दु परिवारों को अपने भवन में शरण देकर इतिहास रचा है। उन्हें सभी तरह की सुविधाएं देकर उनके लिए भारत की नागरिकता के लिए संघर्षरत हैं। आप विभिन्न संस्थानों से जुड़े हुए हैं। स्वभाव से ही आप वीरता, प्रेम, सहृदयता, सहानुभूति, मानवता, समाज एवं देश भक्ति से ओतप्रोत हैं। आत्मशुद्धि आश्रम आप एवं आपके परिवार की सुख समृद्धि तथा दीर्घायुष्य की कामना करते हुए इसी तरह वीरता पूर्वक आर्य संस्कृति, समाज और राष्ट्र की सेवा करते हुए उज्ज्वल भविष्य की आशा करता है।

845

श्री के.सी. सैनी
हजकां हल्का अध्यक्ष, बहादुरगढ़

846

श्री सी.बी. अरोड़ा (एडवोकेट)
अशोक नगर, नई दिल्ली-18

गुरुकुल बादली के वार्षिकोत्सव पर श्री अरूण कुमार आर्य पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी से आशीर्वाद लेते हुए।

**प्रिय बन्धुओं! मास सितम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अक्टूबर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।**

**- व्यवस्थापक**

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

# आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

भाद्रपद-आश्विन सम्वत् 2070 सितम्बर 2013

सृष्टि सं. 1972949113 दयानन्दाब्द 190

वर्ष-12) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-9

(वर्ष 43 अंक 9)

*प्रधान सम्पादक*

**स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'**

**आचार्य राजहंस मैत्रेय**

❖

सह सम्पादक

**स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य**

❖

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

**आचार्य रवि शास्त्री**

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापक: चन्द्रभान चौधरी

❖

**सदस्यता शुल्क**

| | |
|---|---|
| संरक्षक | : 7100 रुपये |
| आजीवन | : 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए) |
| पंचवार्षिक | : 700 रुपये |
| वार्षिक | : 150 रुपये |
| एक प्रति | : 15 रुपये |

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर.

*कार्यालय* : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

## अनुक्रमणिका

| विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|
| विविध समाचार | 4 |
| आश्रम समाचार | 6 |
| वेद सन्देश | 7 |
| पुस्तक समीक्षा | 9 |
| सम्पादकीय : एषणाओं के पार पूज्य आचार्य विजयपाल.. | 10 |
| अष्टांग योग | 11 |
| अपरा और परा विद्या का स्वरूप | 13 |
| पुरुषार्थ | 15 |
| सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र | 16 |
| ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं नि:शुल्क ध्यान योग..... | 18 |
| अण्डा सेवन तो नुकसानदायक है ही | 20 |
| प्रभु प्यारे से जिसका संबंध है उसको हर दम आनन्द... | 22 |
| स्वास्थ्य के दुश्मन-खर्राटे | 21 |
| प्रभु से मांगना सीखिए | 24 |
| औकात | 27 |
| रवि की प्रथम किरण | 27 |
| हंसो और हंसाओ | 28 |
| चादर छोटी, पाँव लम्बे | 28 |
| महामृत्युञ्जय मन्त्र | 29 |
| बे नाम शहीदों के लिए | 30 |
| हिन्दी दिवस दिनांक 14.09.2013 | 31 |
| हृदय रोगियों को विशेष संकेत | 31 |
| मृतक श्राद्ध बनाम पितृयज्ञ | 32 |
| दान सूची | 34 |

**विज्ञापन दर**

| | |
|---|---|
| पिछला कवर पृष्ठ | 5,100 रुपये |
| अंदर का कवर पृष्ठ | 3,100 रुपये |
| पूरा पृष्ठ अंदर | 2,100 रुपये |
| आधा पृष्ठ | 1,100 रुपये |
| चतुर्थ भाग | 600 रुपये |

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

www.thearyasamaj.org



# कर्मयोगी एवं समाज सेवी श्री चन्द्रभान चौधरी

चौधरी चन्द्रभान जी निष्काम सेवा एवं कर्मठता के पर्याय हैं। आपका जन्म सन् 1925 में देश-विभाजन से पूर्व वर्तमान पाकिस्तान में डेरा गाजी खान में हुआ। आपने भारत-विभाजन की त्रासदी को न केवल अपनी आखो से देखा, अपितु उसे झेला भी। विद्यालय एवं महाविद्यालय की शिक्षा प्राप्ति के बाद आपने देश-सेवा एवं समाजसेवा की गरज से सन् 1947 में पुलिस विभाग में नियुक्ति प्राप्त की। पुलिस विभाग में रहते हुए आपने अपना कार्यकुशलता एवं योग्यता से सभी को चकित कर दिया। भारत-पाक युद्ध के दौरान आपने सेवा के साथ सहयोग करते हुए अदम्य साहस एवं बुद्धिमानी का परिचय दिया। फलतः आप 'राष्ट्रपति पुलिस पदक' से सम्मानित हुए। इसके अतिरिक्त आपको अनेक सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों ने पुरस्कृत किया।

प्रथम श्रेणी अधिकारी (डी.सी.पी.) के रूप में सेवा निवृत होने के पश्चात् समाज के पीड़ित एवं पददलित लोगों की सेवा की गरज से आपने आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य शुरु किया जो अनवत्न रूप से जारी है। आर्य समाज में आपने अनेक प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित किया है। आर्य समाज के अनेक मंच भी आपको समय-समय पर सम्मानित करते रहते हैं। कर्मयोगी एवं समाजसेवी चन्द्रभान जी इसी प्रकार मानवता एवं हिन्दु समाज की सेवा करते रहें, इसी विश्वास के साथ उनकी दीर्घायु की कामना करता हूँ। –धर्ममुनि

**श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.)**
**द्वारा एकत्रित दान राशि**

| | |
|---|---|
| श्रीमती चन्द्रकला राजपाल, पश्चिम विहार, दिल्ली | 500/- |
| श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार नई दिल्ली-63 | 250/- |
| श्री सन्तोष भटेजा, लाजपत नगर, दिल्ली | 250/- |
| श्रीमती प्रवीण मेहन्दीरत्ता, विकासपुरी, दिल्ली | 150/- |
| श्रीमती पुष्पलता वर्मा जी विकासपुरी न. दिल्ली | 150/- |
| श्री एच.पी. खण्डेवाल विकासपुरी, दिल्ली | 100/- |
| श्री सेठी परिवार, विकासपुरी, दिल्ली | 100/- |

# मा. सोमनाथ आर्य बने प्रधान

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव का वार्षिक अधिवेशन रविवार 25.08.2013 को श्री ओमप्रकाश आर्य एवं श्री बलदेव राज गुगलानी की अध्यक्षता में निर्वाचन सम्पन्न हुआ। जिसमें मा. सोमनाथ आर्य को प्रधान चुना गया। मा. सोमनाथ पहले 10 वर्ष महामन्त्री एवं तीन वर्ष तक प्रधान रह चुके हैं। वर्तमान समय में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कार्यकारिणी सदस्य, आर्य समाज अर्जुन नगर के संरक्षक, आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय के महामन्त्री तथा वैदिक कन्या उच्च विद्यालय के उप-प्रधान के रूप में कार्य कर रहे हैं।

# विशाल भण्डारा

श्री वीरेन्द्र जी आर्य ग्राम दौलतावाद, गुड़गांव ने अपनी पूज्य माता स्व. बरफोदेवी की स्मृति में दिनांक 20.08.2013 को ग्राम के स्थानीय शिव मन्दिर में विशाल भण्डारे का आयोजन श्रद्धा एवं उत्साह के साथ किया। इस अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी, मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न किया गया। यजमान आसनो को स्वयं वीरेन्द्र जी आर्य सपत्नीक, श्री कालूराम आर्य सपत्नीक, नरेन्द्र जी सपत्नीक, रामवीर सरपंच सपत्नीक ने सुशोभित किया। स्वामी जी ने आचार्य राजहंस मैत्रेय तथा वानप्रस्थी ईशमुनि जी की उपस्थिति में सामूहिक रूप से आशीर्वाद देते हुए यजमान परिवारों की जीवन की मंगलकामना की। आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदपाठ तथा भजनों का कार्यक्रम चला। इस अवसर पर साधु, सन्त, महात्माओं को श्रद्धापूर्वक प्रसाद दक्षिणा देकर विदा किया।

www.thearyasamaj.org



# कृष्ण जन्मोत्सव पर वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य श्रेष्ठी स्व. ला. श्याम सुन्दर आर्य द्वारा स्थापित गुरुकुल बादली जिला झज्जर का वार्षिकोत्सव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। प्रात: 9.00 बजे आचार्या अन्नपूर्णा कन्या गुरुकुल देहरादून के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य श्रेष्ठी गुरुकुल के प्रधान श्री अरूण कुमार ने सपत्नीक यजमान आसन को सुशोभित किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रद्धेय पूज्य तपस्वी स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ रहे। इस मौके पर आश्रम से सभी ब्रह्मचारी तथा आश्रम के वानप्रस्थीगण उपस्थित रहे। प्रसिद्ध भजनोपदेशक कुलदीप भास्कर के ओजस्वी भजनों द्वारा कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। योगाचार्य श्री हरि सिंह के निर्देशन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन किया गया। स्वामी धर्ममुनि जी आचार्या अन्नपूर्णा आदि द्वारा प्रभावशाली व्याख्यान दिये गए। इस अवसर पर स्वामी महेन्द्रानन्द स्वामी केशवानन्द, शिव स्वामी, श्री राजवीर जी आर्य, समेराम जी माजरी, श्री राजकरण जी बादली तथा सैकड़ो की संख्या में स्थानीय श्रद्धालु उपस्थित रहे। यह गुरुकुल सुरम्य स्थान नहर के किनारे बादली गांव में बहादुरगढ़ रोड़ पर स्थित वैदिक संस्कृति का सराहनीय कार्य कर रहा है। जिसमें गोशाला, पुस्तकालय तथा गुरुकुल संचालित है। कार्यक्रम की सुन्दर व्यवस्था धर्मन्द्र शास्त्री (गुरुकुल के प्रबंधक) तथा मनोजशास्त्री (गुरुकुल के आचार्य) द्वारा की गई। शान्ति पाठ के बाद सभी ने स्वादिष्ट भोजन किया।

# जन्म दिवस मनाये गए

1. झज्जर निवासी डाक्टर अशोक नागपाल के सुपौत्र अरीन नागपाल का तृतीय जन्म दिवस नागपाल परिवार द्वारा आत्मशुद्धि आश्रम परिसर में मनाया गया। परिवार द्वारा रविवार 25 अगस्त को यज्ञ करवाया गया जिसमें डाक्टर अशोक नागपाल के सुपुत्र अमित व अनुज नागपाल ने सपत्निक बतौर यजमान शिरकत की। यज्ञ के दौरान आश्रम के मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी ने अपने आशीर्वचनों में बालक के चिरायु होने की कामना करते हुए मानव जीवन पर प्रकाश डाला। वहीं आचार्य राजहंस मैत्रेय ने बाल्यकाल को एक योगी के जीवन के समान बताते हुए गीता में संकलित भगवान कृष्ण के चरित्र की सुंदर व्याख्या की। इस मौके पर आश्रम निवासी श्रीमती रामदुलारी बंसल व डाक्टर अशोक नागपाल की बहन श्रीमती राजरानी नरुला ने भी भजन की प्रस्तुति कर बालक को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर झज्जर से रिटायर्ड बीईओ श्री वीरेंद्रकुमार नरुला, डाक्टर रघुवीर नागपाल, कर्मवीर नागपाल सहित परिवार के अन्य सदस्यगण व आश्रम के सभी निवासी व बच्चे उपस्थित रहे। आश्रम परिवार बालक अरीन के चिरायु होने की कामना करता है तथा अपने निजि कार्यक्रमों का आयोजन आश्रम में करवाने पर डाक्टर अशोक नागपाल का आभार प्रकट करता है।

2. श्री राजेश जी राठी सै. 6 बहादुरगढ ने अपने सुपुत्र अभिषेक का जन्म दिवस आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ की पवित्र यज्ञशाला में यज्ञ भजन एवं सत्संग के साथ श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर सायं 6 बजे आश्रम के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ आयुष्मान अभिषेक को 23वें जन्मदिवस पर सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिया गया। श्रीमती रामदुलारी बंसल, ईश्वरसिंह जी आर्य ने सुन्दर भजनों के द्वारा बालक को अपना अशीर्वाद दिया। इसके बाद श्री राजवीर सिह आर्य आचार्य राजहंस मैत्रेय जी ने आयुष्मान अभिषेक के सुन्दर भविष्य के लिए प्रभाव शाली सन्देश दिया। इस अवसर पर यजमान परिवार को आश्रम की ओर से पटका और स्मृति चिहन् देकर सम्मानित किया गया। अभिषेक को ईश्वरसिंह जी आर्य तथा अन्य सज्जनों ने वैदिक साहित्य प्रदान किया। परिवार की ओर से सभी के लिए स्वादिष्ट भोजन का प्रबन्ध विक्रमदेव शास्त्री, द्वारा किया गया

www.thearyasamaj.org



# अखेराम सरदारों देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव का 6वां स्थापना दिवस समापन समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न

महाशय अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फुर्रुखनगर गुड़गांव का 6वां स्थापना दिवस समारोह दिनांक 11/08/2013 रविवार को स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आश्रम के पवित्र सानिध्य में और आचार्य बलदेव जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में उत्साह पूर्वक मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री रघुनाथ जी ठेकेदार रहे। प्रात: 9 बजे से आचार्य राजहंस मैत्रेय जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ प्रारम्भ हुआ। श्री नाहर सिंह जी बिजवासन गुड़गांव, श्री ईशमुनि जी सपत्नीक, श्री कन्हैयालाल जी आर्य सपत्नीक गुड़गांव,एवं मा. हरीसिंह जी जमालपुर ने यजमान आसनों को सुशोभित किया। इस अवसर पर आचार्य जी ने यज्ञ की महिमा पर बोलते हुए कहा कि यज्ञ विष्णु है, जो सबका पालन-पोषण करता है। और इसकी वैज्ञानिक प्रक्रिया पर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी धर्ममुनि जी ने सामूहिक रूप से यजमानो को आशीर्वाद दिलाया यज्ञोपरान्त श्री वीरेन्द्र जी आर्य एवं श्री रामवीर सरपंच दौलताबाद गुड़गांव ने अपने कर कमलो द्वारा विशेष लोगों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया तत्पश्चात प्रसाद वितरण किया गया। प्रात: 10:30 बजे भजनों के साथ आश्रम स्थापना समारोह का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर आचार्य विजयपाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा विशिष्ट अतिथि रहे। पं रमेश चन्द्र, बहन सुमित्रा, पं जयभगवान, आयु धाम झटीकरा के छात्रों, मा. जगवीर सिंह, आश्रम के प्रधान सत्यानन्द जी आर्य एवं स्वामी हरीशमुनि जी ने सुमधुर भजनों का कार्यक्रम रखा। प्रमुख वक्ता स्वामी रामानन्द जी, स्वामी महेन्द्रानन्द जी श्री कन्हैयालाल जी आर्य, श्री रघुनाथ जी ठेकेदार, आचार्य सत्यवीर जी प्रेरक, श्री जय नारायण जी वकील योगाचार्य रामजीवन जी, आचार्य राजहंस मैत्रेय आदि विद्वानों ने विद्वतापूर्ण मानव निर्माण एवम् राष्ट्रीय उन्नति पर विशेष प्रकाश डाला। आचार्य विजयपाल जी ने ओजस्वी एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया। समारोह अध्यक्ष आचार्य बलदेव प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यो को देश समाज की समस्याओ पर जागरूक रहने का आहवान किया। आचार्य सत्यवीर जी प्रेरक ने आश्रम की ओर से एक सप्ताह पूर्व द्रोणाचार्य सी. सै. स्कूल धनखड सी. सै. स्कूल, गवर्मेन्ट सी. सै. स्कूल फर्रुखनगर में योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। छात्रों ने आसनों का प्रदर्शन भी किया। इस अवसर पर विभिन्न लोगो को सामाजिक कार्यो के लिए सम्मानित किया गया। आश्रम के मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी ने अपना आशीर्वाद रूपी उदबोधन दिया। और सभी संन्यासियों, विद्वानो दानियों, कार्य कर्ताओं और गुड़गांव, दिल्ली, झज्जर, बहादुरगढ, कापसहेड़ा आदि स्थानों से आये हुए सभी सज्जनों तथा श्रोताओं का हार्दिक धन्यवाद किया। अंत में भूमिदाता ईशमुनि जी का सभी के लिए हार्दिक आभार। मंच संचालन श्री राजवीर जी आर्य ने प्रेरणाप्रद शिक्षाएं देकर कुशलता पूर्वक किया। भंडारे की व्यवस्था विक्रमदेव शास्त्री एवम् हरिओम् आर्य ने कुशलता पूर्वक की। सभी लोगों ने स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया। आश्रम के सुरम्य स्थान एवं सफल कार्यक्रम को देखकर उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

## दरिन्दें

हौसले इस कदर बढ़े दरिन्दों के  
नौच डाले हैं पर परिन्दों के  
जिस जीने से मौत हो बदतर  
क्यों जीते हो यारों मुर्दों से  
वक्त आ गया है कुर्बान होने का  
नाम लिखवालो साथ शहीदों के  
सम्प्रदायिकता की आड़ लेकर के  
झुण्ड बन गए हैं भ्रष्ट गिद्दो के  
अपनी ताकत को क्यों भुला बैठे  
जाल तोड़े हैं विदेशी फन्दों के

– **कवि कृष्ण 'सौमित्र''**  
13-57, गली बम्बे वाली, बहादुरगढ़

www.thearyasamaj.org



# संसार को आर्य कैसे बनायें?

– श्री शिव कुमार शास्त्री

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्न्तोऽरावणः।। पवमानः सोमो देवता।
ऋ. 6.63.5

हे (अप्तुरः) सत्कर्मों में निपुण सज्जनो (इन्द्रं) परमेश्वर्यशालियों को (वर्धन्तः) बढ़ाते हुए (अराव्णः) पापियों को (अपघ्नन्तः) नाश करते हुए (विश्वं) सम्पूर्ण संसार को (आर्य) आर्य (कृण्वन्तः) बनाओ।

जब तक संसार वैदिक शिक्षाओं को अपने आचरण में लाकर आर्य नहीं बनता, तब तक संसार से ईर्ष्या, द्वेष, अशान्ति और क्षोभ का विनाश कठिन ही नहीं असम्भव है। क्योंकि ये सम्पूर्ण संकीर्णताएं, उदात्तउपदेश, निर्मल-ज्ञान और उदारता से ही समाप्त हो सकती हैं। जब हम अपनी चिन्तनशक्ति को किसी मत की चार दीवारी में बन्द कर देते हैं तो हमारी दशा में और एक कुएं के मेंढक की दशा में कोई अन्तर नहीं होता। वेद की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह विचार पूर्वक अपने और संसार के कल्याण के मार्ग पर चले। वह हिन्दु, मुसलमान और ईसाई कुछ न बने, मनुष्य बने। आप कहेंगे कि वेद भी तो आर्य बनने की बात कहता ही है। किन्तु 'आर्य' का अभिप्राय भी तो श्रेष्ठ मनुष्य ही है। 'आर्यः' ईश्वरपुत्रः। आर्य ईश्वर पुत्र है। वह पिता का अनुव्रत होकर प्राणिमात्र के हित का ध्यान रखता है।

वेद कहता है कि 'अहं भूमिमाददाम आर्याय' मैं इस पृथ्वी को आर्यो को देता हूं। वस्तुतः सुख और शान्ति के लिए इस भूमि पर आधिपत्य आर्यो का होना चाहिए। जो जीव मात्र के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझ कर व्यवहार करें। वे ही तो आर्य है। इसी रहस्य के आधार पर वेद ने आदेश दिया कि 'कृण्वन्तोविश्मार्यम्' संसार को आर्य बनाओ। प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि आर्य बनाने का उपाय क्या है? तथा आर्य कौन होते है? इन दोनों प्रश्नों के उत्तर मन्त्र के पूर्व भाग और उत्तर में दे दिए गए हैं।

मन्त्र में पहली बात कही है, 'इन्द्र' वर्धन्तः', इन्द्र गुण विशिष्ट व्यक्तियों का संरक्षण करो, उनको बढ़ाओ और 'अराव्णः अपघ्नन्तः' कृपण, अदानी, अनुदार, ईर्ष्यालु और स्वार्थियों का सर्वथा उच्छेद करो। दूसरे शब्दों में जो इन्द्र हैं वे आर्य है और जो अदानी आदि दुगुर्ण युक्त हैं वे दस्यु हैं, अनार्य हैं। संसार में शान्ति के साम्राज्य के लिए आर्यो की वृद्धि होनी चाहिए और दस्युओं का विनाश होना चाहिए।

मन्त्र में 'इन्द्र' शब्द अधिक ध्यान देने योग्य है। वैदिक वाङ्मय में इस शब्द का, अर्थ के आधार पर बहुत विस्तृत क्षेत्र है। प्रत्येक प्रकार की उत्तम विशेष शक्ति रखने वाले जड़-जंगम को हम इस नाम से पुकार सकते हैं।

संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'इदि' धातु से जिसका अर्थ परमेश्वर्य हे, यह शब्द बना है। अतः इसका शाब्दिक अर्थ हुआ परम ऐश्वर्य युक्त। इन्द्र को बढ़ाने का अर्थ भी यही हुआ परमेश्वर्य शालियों को बढ़ाओ।

सांसारिक धनधान्य को परमेश्वर्य नहीं कह सकते। उसका स्थान तो परमेश्वर्य में सबसे पीछे है। अतः इस शब्द का मुख्यार्थ यहां आत्मज्ञानी है। 'इन्द्र आत्मा' यह काशिका में लिखा भी है। कोश में भी इसके अर्थो में 'विद्यैश्वर्ययुक्तम्' लिखा हुआ है।

पौराणिकों ने कल्पना कर रखी है कि इन्द्र के एक हजार आंखें हैं। इसकी संगति आचार्य चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र में इस प्रकार लगाई है कि, इन्द्रस्यहिमन्त्रिपरिषदृषीणांसहस्त्रम्। सा तच्चक्षुः। तस्मादिदं द्वयक्ष सहस्त्राक्षमाहुः।' कोटल्य अर्थशास्त्र अधि. 1 अध्याय 5 अर्थात् इन्द्र की सचिव सभा में एक हजार ऋषि थे। वे ही उसकी आंखे थी। इसीलिए दो आंखो वाले इन्द्र को एक हजार आँखों वाला कहते हैं। किन्तु मैं तो समझता हूं इन्द्र उस आत्मज्ञानी का नाम है, जिसके कथन में एक हजार ऋषियों से विचारे गए, अर्थ के समान सन्देह को कोई स्थान न हो। आत्मज्ञान से बढ़कर कोई ऐश्वर्य नहीं। चाणक्य ने ही अपने सूत्र में लिखा है-

'जितात्मा सर्वार्थैः संयुज्यते' वशी को कोई वस्तु अलभ्य नहीं। राज्य करने का अधिकार भी शास्त्रों ने आत्मज्ञ वशी को ही दिया है। आचार्य शुक्र के निम्न

www.thearyasamaj.org


सोने के अक्षरों में लिखने योग्य हैं-

**एकस्यैव योऽशक्तोमनसः सन्निबर्हणे।**
**महीं सागरपर्यन्तां स कथं हयवजेष्यति॥**

जो राजा अकेले अपने मन को ही वश में नहीं रख सकता। वह सागर पर्यन्त पृथ्वी को कैसे वश में रख सकेगा। अतः सर्वप्रथम संसार में सुख शान्ति के विस्तार के लिए आर्यो की (आत्मज्ञानियों की) वृद्धि होनी चाहिए, क्योंकि आत्मज्ञानी सारी वसुधा को कुटुम्ब समझते और कहते हैं। उनके समीप अपने पराये का कोई प्रशन नहीं होता। वे पाप से घृणा करते हैं पापी से नहीं। इस प्रकार के आर्य प्रथम कोटि के आर्य हैं।

आत्मज्ञान से दूसरे नम्बर पर इन्द्र शब्द शारीरिक बल रखने वालों पर प्रयुक्त होता है। बल भी बहुत बड़ा ऐश्वर्य है। छान्दोग्य 7, 8 में लिखा है कि, **''बलं वाव विज्ञानाद् भयः। अपि हि शतविज्ञानवतामे को बलवाना कम्पयते।''** अर्थात् 100 कोरे ज्ञानियों से एक बलवान श्रेष्ठ है। क्योंकि वह अपने बल से उन सैकड़ों को कंपा देता है। किन्तु वह बल, ''आर्त प्राणाय वः शस्त्रन्न-प्रहर्तुमनागसि'' तुम्हारा बल दु:खियों की रक्षा के लिए होना चाहिए, निर्दोषों को सताने के लिए नहीं। जैसा कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने कहा था। **'क्षत्रियेर्धार्यते चापो नार्तशब्दो भवेदति।''**। क्षत्रिय इसलिए धनुर्धारण करते है कि किसी दु:खी की करूणपुकार उनके कानों में न पड़े। निर्बलों और असहायों को सजाने से शक्ति का क्षय होता है। दोनों की करूणपुकार में अग्नि जैसी भस्म करने की शक्ति रहती है। बड़े अनुभव की बात कही है रहीम ने-

निर्बल को न सताइए जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की सांससों सार भसम हुई जाय॥

किसी उर्दू के शायर ने भी खूब कहा है-

ग़मज़दों की आहोनाला रायगां होता नहीं।
या ज़मी होती नहीं या आसमां होता नहीं॥

इसीलिए पुराना क्षात्रधर्म था कि बालक, स्त्री, वृद्ध, घायल, निःशस्त्र और दीनता प्रकट करने वालों को (विशेष अवस्था को छोड़कर) नहीं मारा जाता था। अतः लोकव्यवस्था के लिए ये इन्द्र भी अनिवार्य हैं।

तीसरे नम्बर पर यह शब्द सांसारिक धन वैभव के लिए भी प्रयुक्त होता है। किन्तु उसी धनी को इन्द्र कहा जाएगा जिसकी दानसरिता का स्त्रोत दीन पात्रों के लिए कभी मन्द नहीं होता। जिनकी सम्पत्ति किसी भले कार्य में आती ही नहीं वे तो 'अनिन्द्र हैं। भगवान् का यह आदेश है कि कमाने के समय से देने के समय, दिल और बड़ा रहना चाहिए। ''शतहस्त समाहर, सहस्त्रहस्त संकिर'' अथर्व. 100 हाथों से कमाते हो तो, हजार हाथों से दो।

वेद तथा संस्कृत का ''अराति'' शब्द इस रहस्य पर अच्छा प्रकाश डालता है। आजकल यह शब्द शत्रु के अर्थ में रूढ़ हो चुका है। किन्तु प्राचीन काल में यह शब्द कंजूस और अदानी के लिए ही प्रयुक्त होता था। किन्तु कृपण का वाचक यह शब्द शत्रु अर्थ में कैसे प्रयुक्त होने लगा, इसमें एक इतिहास छिपा है। वस्तुतः ऐसों को जिनका पैसा समाज के संकट के समय काम नहीं आता, वे लोगों की दृष्टि से गिर जाते हैं और लोग उनके साथ शत्रु जैसा व्यवहार करते हैं। वेद कहता है-''अपृणन् मडितारन्न विन्दते'' ऋग्वेद। बिना किसी के दुःख में काम आए तुम अपने शुभ चिंतक नहीं बना सकते। वेद में स्थान-स्थान पर ऐसे धन की प्रार्थना है जो सबके काम आवे। जो केवल अपने ही काम आता है उसे तो ''केवलाघो भवति केवलादी'' ऋ. जो केवल अपने उपयोग के लिए ही कमाता है उसे ''पापस्वरूप'' कहा गया है। सेवा और उपभोग हीन धन को वेद में बड़े काव्यमय ढंग से ''आकाशबेल'' बताकर दूर हटाने की प्रार्थना की है।

**या मा लक्ष्मीः पतयालुरजष्टा अभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम् अन्यत्रास्मात् सवितस्तामिती धा हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः।** अथर्व 7.115.2

हे प्रभो! प्रीति और सेवा के काम में आने वाली अतएव मेरा पतन करने वाली यह लक्ष्मी मुझे ऐसे चिमट गई है, जैसे आकाश बेल वृक्ष पर चढ़ जाती। वह बेल वृक्ष को कोई लाभ नहीं पहुंचाती, अपितु उसका रस चूसती रहती है और अन्त में उसे सुखा देती है। इसी प्रकार सेवा और प्रेम के काम न आने वाला धन धनी को कोई लाभ नहीं पहुंचाता। अपितु व्यर्थ का चिन्ता-भार बढ़ा कर उसकी मृत्यु का कारण बनता है। अतः मन्त्र के उत्तर भाग में प्रार्थना की गई। प्रभु ऐसे धन को दूर हटा के मुझे ''वसु'' दो जो संसार को बसाए, उजाड़े नहीं। तो इन तीसरे प्रकार के इन्द्रों की

www.thearyasamaj.org


भी संसार में बहुत आवश्यकता है।

अब यह प्रश्न है। ये तीनों प्रकार के इन्द्र कैसे बढ़े? तो मन्त्र में कहा ''अराव्ण: अपघ्नन्त:'' कृपण, अदाता और ईर्ष्यालु स्वार्थियों का विनाश करो। जहां इन्द्रो के बढ़ने से संसार में सुख और समृद्धि बढ़ेगी वहां दस्युओं के विनाश से संसार में शांति स्थापित होगी।

दूसरे शब्दों में सार यह निकला कि संसार में उच्च कोटि के ब्राह्मण, उच्च कोटि के क्षत्रिय और उच्च कोटि के वैश्य बढ़ने चाहिए। मन्त्र में ''वर्धन्त:'' पद से ध्वनित होता है कि किसी भी राष्ट्र में शूद्रों की संख्या कम रहनी चाहिए। अर्थात् उनको अपनी योग्यानुसार वैश्व, क्षत्रिय और ब्राह्मण बनने का अवसर मिलना चाहिए। जैसा कि मनु ने कहा है-

**यद्राष्ट्रं शूद्रभूयिष्ठं नास्तिकाआन्तमद्विजम्।**
**विनश्यत्याशु तत् सर्वदुर्भिक्ष व्याधि पीडितम्॥**

जिस राष्ट्र में शूद्र और नास्तिक अधिक हो जाते हैं। उसका विनाश हो जाता है और उसमें अकाल तथा बीमारियां फैलती रहती हैं। क्योंकि उस राष्ट्र में पवित्रता और कार्य सम्पादन की योग्यता समाप्त हो जाती है।

अत: वेद ने आज्ञा दी कि संसार में ज्ञान-विज्ञान के विस्तार के लिए, दोनों के आर्तनाद को समाप्त करने के लिए, अपने श्रमार्जित द्रव्य को बांटकर खाने के लिए और भ्रातृभाव की स्थापना के लिए संसार को ''आर्य'' बनाना चाहिए।

# पुस्तक समीक्षा

**पुस्तक का नाम:** शिशु निर्माण, **लेखक:**स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, **प्रकाशक :**आर्ष गुरुकुल न्यास बड लूर, कामारेड्डि, आन्ध्रप्रदेश, **मूल्य :** 300/- रूपये

स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने कक्षा 1 तक के बाल छात्रों के लिए ''शिशु निर्माण'' बाल शिक्षा की प्राथमिक वैदिक पुस्तक प्रकाशित की है। जिससे प्रारम्भ से ही उन्होंने शिशु निर्माण के लिए 5 स्थान निश्चित किए हैं। सूत्र स्थान, वाक्यस्थान, इतिहास स्थान, लक्ष्यस्थान और विज्ञान स्थान। जो शिशु और भारतीय वैदिक संस्कृति के लिए, आत्म गौरव, बौद्धिक विकास, देश भक्ति, परोपकार और जीवन के प्रति पूरी तरह से जागरूक बनाने में साधन बनेगी। हमें अपने परिवारों में बच्चों के लिए, गुरुकुलों तथा विद्यालयों में इस पुस्तक को लगाना चाहिए। यह रंगीन चित्रों से सुसज्जित भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत है। स्वामी जी ने यह सुन्दर पुस्तक प्रकाशित कर बहुत सराहनीय कार्य किया है। आशा वैदिक धर्मी इस पुस्तक से लाभ उठायेंगे। **-राजहंस मैत्रेय**


## आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2000/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

www.thearyasamaj.org


सम्पादकीय

# एषणाओं के पार पूज्य आचार्य विजयपाल जी विद्यावारिधि का परलोक गमन

रामलाल कपूर टस्ट द्वारा संचालित पदवाक्य प्रमाणज्ञ ब्रह्मदत्त जिज्ञासु द्वारा सिंचित पाणिनि महाविद्यालय विरजानन्द आश्रम रेवली सोनीपत के आजन्म ब्रह्मचारी, वैदिक संस्कृति व वैदिक वाड.मय को पूर्णतया समर्पित, निर्लेप जीवन के जीवन्त उदाहरण, छात्रों के जीवन निर्माता, सारस्वत साधना में आजीवन अहर्निश साधनारत, आर्य राजनीति से कोशो दूर, मन, वचन और कर्म में एकत्व स्थापक, स्वनिष्ठ. अर्थ शुचिता के प्रबल प्रमाण, यशादि एषणाओं के पार, विरोधी पहलुओं के समन्वयक, वस्तुत: छात्रों के आदर्श, आत्मीयता से ओत प्रोत, निरभिमान सहज सरल और सौम्यता की प्रतिमूर्ति, आचार्य विजयपाल जी विद्यावारिधि दीर्घकालीन अधरंग की बीमारी से असमर्थ होकर संघर्ष करते हुए दिनांक 7/08/2013 को अपने पार्थिव शरीर को छोड़कर आगामी जीवन विकास के लिए समुन्नत गये। जो लैकिक दृष्टि से एक अपूर्णीय क्षति है। वे श्रेष्ठतम् गुरुकुल परम्परा के प्राण थे। आचार्य परम्परा में वे अतुलनीय हैं। तथा कथित बहुत से जड.बुद्धि आचार्य, विद्वान, संन्यासी उन्हें कभी नहीं समझ पाये। यहां तक कि छात्र भी बहुत कम उन्हें समझ पाये क्योकि ज्ञान में सरलता बड़ी जटिल होती है उसे बहुत कम लोग समझ पाते हैं। और वे उनकी नासमझी को समझकर उस पर पर कोई ध्यान नहीं देते थे। उनकी वैचारिक स्वतंन्त्रता और स्पष्टता बेजोड़ थी जिसके कारण बहुत से लोग उन्हें अव्यवहारिक अज्ञानी और कठोर मानते थे। दर्शनों को पढाते समय वे साफ कहते थे कि मैं योगी नही हूं मैं तो शब्दार्थ बता रहा हूं। यदि तुम्हें विभूतियों के बारे में जानना हो तो योगियों से सम्पर्क करों। पठन पाठन के अतिरिक्त प्रवचन एवं भाषण देने की उनकी कोई रुचि नहीं थी। यदि कोई देता है तो वह दे, इसमें उनका कोई विरोध नहीं था परन्तु वे यह भी मानते थे कि लोग जितना कहते हैं अपवाद को छोड़कर उससे अधिक वे ही अज्ञान में होतें हैं। उन्हें स्वयं भी उसका पता नही होता। एक बार सायंकाल भ्रमण करते हुए मैने उन्हें पूछा कि आचार्य जी क्या भूत प्रेतों का अस्तित्व होता है तो उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया कि मैने तो कभी देखा नहीं, लोगों से इनके बारे में चर्चाएं तो सुनी हैं। मैं उनके इस निर्दोष ज्ञान पूर्वक अनुत्तर को पाकर चुप हो गया। ऐसा इतना सरल उत्तर जिसकी कोई आशा नहीं थी। प्रश्न का समाधान तो नही हुआ परन्तु उनके ज्ञान गाम्भीर्य की पारदर्शिता और उसका परिणाम बाल स्वभाव का अवश्य बोध हो गया। इसी प्रश्न के उत्तर में दूसरे जड़ बुद्धि लोग बिना प्रमाण मागे ही शास्त्रों से प्रमाण देकर यह सिद्ध करने में लग जाते हैं कि इनका कोई अस्तित्व नही है यह कहने की बजाय कि मुझे इंस विषय में कोई अनुभव नही। जीवन निर्माण के बारे में पूछने पर उनका एक मात्र उत्तर होता था कि जिसे भी कुछ बनना है वह मेरे जीवन को देख लें। और यर्थाथ में ही उनका जीवन अदभुत था वे कहते नहीं थे करते थे। उनका जीवन निश्चित ही आदर्श था समझने योग्य था। मेरे साथ गुरुकुल में घटी एक उल्लेखनीय घटना हैं। गुरुकुल जब बहालगढ सोनीपत में था तब की बात है। गुरुकुल में प्रवेश के कुछ महींनो बाद लगभग 1.5 किमी दूर खेतों में बने एक घर से दूध निकलवाकर लाने की मेरी पर्याय थी फिर उसे गर्म करके प्रत्येक छात्र हेतु गिलासों में वितरित करने के बाद चार्ट में लिखकर ठीक समय पर आचार्य जी को एक गिलास दूध देना होता था। वे दूध के साथ एक औषधि लिया करते थे। एक दिन प्रात:काल से ही जोर से वर्षा हो रही थी दूध लाने में देरी हो गयी क्योकि खेतो की मेंड़ो से जाना होता था खेतो में पानी भरा होने के कारण फिसलने का भी डर था इसलिए सावधानी से चलने में और देरी हो गयी। मुझे डर था कि आज आचार्य जी कुछ अवश्य ही कहेंगे। मैंने शीघ्र ही दुग्ध गर्म किया और गिलासों में वितरित कर आचार्य जी के गिलास में दुग्ध लेकर पानी से भरी बाल्टी में थोड़ी देर ठंडा करके बाहर से हाथ लगा कर देखा तो ठंडा हो गया ऐसा जानकर शीघ्र ही डरता हुआ भागकर प्रतीक्षारत आचार्य जी की मेज पर दूध से भरा गिलास रख दिया। देर होने पर भी उन्होंने कुछ नहीं कहा संभवत: वे देरी का कारण समझ गये होंगे। उन्होंने अपनी औषधि निकाली और मुख में फांक ली। ऊपर से गिलास के किनारे को पकड़कर प्रतिदिन के समान जैसे ही दुग्ध का घूंट भरा तो दुग्ध बहुत गर्म होने के कारण न पी सके और न ही सामने उगल सके क्योकि सामने मेज पर किताब थी। उनका मुख जल गया। और वे विवश होकर गर्म दुग्ध को अन्दर निगल गये। उनके आंखों में आसू आ गये। मैं भी कांप गया। अपनी गल्ती का चुप चाप खड़ा अहसास कर रहा था और डरा हुआ था न जाने क्या कहेंगे। वे कभी कुछ नहीं कहते, फिर भी उनके सामने आने की हिम्मत नही होती थी। थोडी देर बाद उन्होंने सहज भाव से गिलास उठाकर कहा एक घूंट तुम पीकर देखो अभी तुम्हें पता नहीं है कि पीने योग्य दूध कैसा होता है। मैं आश्चर्य में था कि उन्होंने थोड़ा भी क्रोध नहीं किया। एक बार मैने पूछा कि योग क्या है तो उन्होने कहा जो तुम करते हो उसमें पूरे डूब जाओ। यह बात जब तो समझ में नही आयी परन्तु अब वह पूरी तरह समझ में आ गयी। इस बात को हमने पूरे जीवन चरितार्थ होते देखा है। इस प्रकार उनका जीवन अद्भुत प्रेरणादायी एवं समझने योग्य था। मैने उनसे बहुत कुछ सीखा। उस तप: पूत पूज्यपाद आचार्य श्री चरणों मैं शत् शत् नमन।

**– राजहंस मैत्रेय**

www.thearyasamaj.org



# अष्टांग योग

शोधकर्ता -बलवीर सिह, मार्गदर्शक- डा.रमाकान्त मिश्रा, महात्मा ज्योति राव फुले विश्वविद्यालय राजस्थान

महर्षि पतंजलि द्वारा संसार के समस्त दुखों के निवार्णार्थ योग की जिस वैज्ञानिक पद्धति को क्रमबद्ध लिपिबद्ध किया गया है उसे अष्टांग योग कहते हैं। **यमनियमाऽऽसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणाध्यान समाधयोऽष्टावंगानि:॥** यो.द. 2।29

यह योग की एक सरल पद्धति है जिस पर चल कर गृहस्थ भी योग की उच्च अवस्था को उपलब्ध हो सकता है अष्टांग योग को हम दो भागो में विभाजित करके इसका सरल अध्ययन कर सकते हैं। **1. बहिरंग**-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार ये पांच अंग बहिरंग साधन हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से योग के लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हैं। **2. अंतरंग**- धारणा, ध्यान, समाधि ये अन्तरंग साधन हैं। जो लक्ष्य की प्राप्ति में सीधे सहायक हैं। यम चित्त को वश में करने का साधन है। यम एक आध्यात्मिक अनुशासन है। जिसे अपना कर व्यक्ति कर्मो की शुद्धि करता है। ऋषि पंतजलि ने इन्हे पांच प्रकार का कहा है। **अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा: यमा:॥** यो.द. 2।30

**अहिंसा**- अहिंसा का अर्थ है -मन, वचन तथा कर्म से किसी भी प्राणी को कष्ट न देना।

**तत्राहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनभिद्रोह:** यो. द. व्यासभाष्य 2।30

**सत्य**- प्राणियों के कल्याणार्थ जैसा देखा सुना व अनुभव किया गया हो वैसा ही अपनी वाणी से कथन करना । क्योकि सत्य की महिमा परम है सत्यनिष्ठ व्यक्ति की वाणी अमोघ होती है । **सत्यप्रतिष्ठायाम् क्रियाफलाश्रयत्वम्** यो द 2।36 **अस्तेय**- अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना। शास्त्र की आज्ञा के विरुद्ध किसी अन्य के पदार्थ को ग्रहण करना या उसकी मन में इच्छा करना भी चोरी है। **स्तेयमशास्त्रपूर्वक द्रव्याणां परत: स्वीकरणम्। तत्प्रतिषेध: पुनरस्पृहारूपमस्तेयमिति** यो. द. व्यासभ। 2।30 जो व्यक्ति अस्तेय भाव में पूर्ण रुप से प्रतिष्ठित हो जाता है, उसे संसार के सभी ऐश्वर्य स्वयं ही उप्लब्ध हो जाता है **अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्** यो. द. 2।37

**ब्रह्मचर्य**-ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्म के समान आचरण करना । अपनी गुप्तेन्द्रिय का संयम करने से वीर्यलाभ को प्राप्त होना **ब्रह्मचर्य गुप्तेन्द्रियस्योपस्थस्य संयम:** यो. द. व्यासभाष्य 2।30 **ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभ:** यो. द. 2।38

**अपरिग्रह** - का अर्थ हे जीवन जीने के लिए न्यूनतम साधनो का प्रयोग करना । क्योकि संग्रह की गई वस्तु अपनी सुरक्षा के लिए अधिक समय व उर्जा की मांग करती है जिस कारण भजन साधना में व्यवधान होता है जो दु:ख का कारण बनता है।

**विषयाणामर्जनरक्षणक्षयसंगहिंसा**
**दोषदर्शनादस्वीकरणमपरिग्रह:**

यो. द. व्यासभाष्य 2।30

अपरिग्रह सिद्ध योगी को अपने जन्म जन्मान्तर के स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। **अपरिग्रहस्थेर्ये जन्मकथन्तासम्बोध:** यो द 2।39 **नियम** -जिन व्यवस्थाओ के द्वारा यह जगत चलायमान है - सूर्य, चांद, पृथ्वी स्थूल जगत व सूक्ष्म जगत उन व्यवस्थाओं को नियम कहते हैं। उस परम तत्व से सतत अनुरक्ति को नियम कहते हैं।

**अनुरक्ति: परे तत्वे सततं नियम स्मृत:।** त्रिशिखोपनिषद 29 साधना के अनुकूल वृत्तियों का प्रवाह व प्रतिकूल वृत्तियों का त्याग नियम कहलाता है । **सजातीय प्रवाहश्च विजातीय तिरिष्कृति:। नियमो हि परान्दो नियमात्क्रियते बुधै:॥** तेजोबिन्दु उपनिषद योगदर्शन मे इनकी संख्या पांच बताई है- **शौचसन्तोषतप: स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा:।** यो दर्शन 2/32 **शौच**- शौच का अर्थ शुद्धि से है वह शरीर स्तर व आत्म स्तर पर। मनु महाराज ने इसे इस प्रकार कहा है- जल से शरीर के अंग शुद्ध होते हैं। सत्य का पालन करने से मन की शुद्धता व ज्ञान करने से बुद्धि की शुद्धता होती है। **अद्भिर्गात्राणि शुद्धयन्ति मन: सत्येन शुद्धयति। विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति।** मनु 5/109

**सन्तोष**- अन्त:करण में सन्तुष्टि का भाव और तृष्णा से रहित अत्यधिक पाने की इच्छा का अभाव ही सन्तोष है सभी सुखों का मूल सन्तोष है -**सन्तोष परमास्थाप्य सुखार्थी संयतो भवेत। सन्तोष मूलं हि सुखं दुखमूलं विपयर्य:॥** मनु 4/120 जो सन्तोष धारण करता है उसके समस्त क्लेश मिट जाते हैं। व उत्तम सुखों की प्राप्ति होती है **सन्तोषादनुत्तमसुखलाभ:।** योग दर्शन 2/42

www.thearyasamaj.org



**तप**- सभी तरह के द्वन्द्वों को सहन करना तप कहलाता है **तपो द्वन्द्वसहनम्** । व्यास भाष्यम् यो द.सू 2/32

शरीर इन्द्रिय प्राण और मन को उचित रीति से संयमन करना तप कहलाता है तप से ही इन्द्रियो की मन की व बुद्धि की शुद्धि होती है इससे योग व अन्य सिद्धियां प्राप्त होती हैं **कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपसः।** यो.द. 2/43

**स्वाध्याय**- स्वाध्याय का अर्थ है स्व अध्ययनम् अर्थात् आत्म निरीक्षण स्वयं के द्वारा स्वयं को जाानना इसके लिए ओंकर,गायत्री आदि मन्त्रो का जय करना,बेद उपनिष्द आदि मोक्ष दायक शास्त्रो का अध्यपन करना। **प्रणवादिपवित्राणां जपो मोक्षशास्त्राध्ययनं वा** यो.द. व्यासभा. 2।1

स्वाध्याय से चित भी शुद्धि होती है, आत्म ज्ञान की प्राप्ति होती है। स्वाध्याय शील व्यक्ति की देव,मन्त्र दृष्टा ऋषि और सिद्ध पुरुष प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग करते हैं। **स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः** यो.द. 2।44

**ईश्वर प्रणिधान**-शरीर मन और बुद्धि से किए जाने वाले सारे कर्म व उनके फल ईश्वर को अर्पित कर देना ही ईश्वर प्रणिधान है। **ईश्वरप्रणिधानं सर्वक्रियाणांपरमगुरावर्पणं तत्फलसंन्यास वा** यो.द. व्यासभा 2।1 **आसन**- आसन को व उसके लाभ को समझने के लिए हम इसे दो भागो में विभाजित कर सकता है। 1-वे आसन जिसमे हम बैठकर,खडे होकर या लेटकर हम ध्यान साधना कर सकते हैं। जैसे सुखासन पदमासन वज्रासन स्वस्तिकासन, आदि इन आसनों में हम लम्बें समय तक सुख पूर्वक स्थिरता से रह सकते हैं **स्थिर सुखं आसनम्।** योग द.2/46 2-दूसरे प्रकार में सहयोगी आसन आते हैं जो शरीर को स्वस्थ करतें हैं **आसनेन रुजो हन्ति** गो.स.2/11द्वन्द्वों को सहन करने की शक्ति देते हैं **ततो द्वन्द्वानभिघातः** योगद.2/48 घेरण्ड संहिता में भी जितने जीव हैं उतने ही आसन बताएं हैं **आसनानि समस्तानि यावन्ति जीव जन्तवः** घेरण्ड सं. 2/1.2

**प्रणायाम**- आसन के सिद्ध होने पर श्वास प्रश्वास की गति को यथाशक्ति नियन्त्रण करने की क्रिया को प्रणायाम कहते हैं - **तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः** यो. द. 2/49 चित्त श्वास की गति के साथ गति करता है जब प्राणायाम के द्वारा प्राणवायु को रोकते हैं तो चित्त भी रुकता है और अभ्यास करने से चित्त की चंचलता दूर होकर वह धारण करने योग्य हो जाता है। योग दर्शन मे प्रणायाम के चार प्रकार बताये गये है। बाह्य वृत्ति, आभ्यान्तर वृत्ति, स्तम्भवृत्ति और विषयाक्षेपी हठयोग प्रदीपिका में सूर्यभेदी, उज्जायी, शीतकारी, शीतली, भस्त्रिका, भ्रामरी ,मूर्च्छा और प्लावनी से आठ प्रकार के प्रणायाम बताये हैं। इसके अतिरिक्त हठयोग के शास्त्रों में नाड.ी शोधन और केवली का भी वर्णन मिलता है **प्रत्याहार**- इन्द्रियां बहिर मुखी होती हैं वे अपने आहार को भोग के रूप में पदार्थो से पूरा करतीं हैं इसमें चंचल चित्त इन्द्रियों का सहयोग करता है लेकिन प्रणायाम के अभ्यास से चित्त की चंचलता शान्त हो जाती हैं। और चित्त अर्न्तमुखी हो जाता हैं। तब इन्द्रियां अपने आहार को तत्व के पूरा करने में लग जाती हैं। यही प्रत्याहाार है इन्द्रियों द्वारा अनुसरण करके पदार्थ भोग से मुक्त हो जाना ही प्रत्याहार है **स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः** योग द.2/54

**धारणा**- जब प्राणायाम के अभ्यास से चित्त शान्त हो जाता है। और प्रत्याहार के अभ्यास से अर्न्तमुखी हो जाती है तब चित्त को किसी स्थान वस्तु शरीर के अन्दर नाभिचक्र, हृदयचक्र, नासिका का अग्रभाग भ्रकुटी के मध्य या जिह्वा के अग्र भाग पर स्थिर करना धारणा कहलाता है **देशबन्धचित्तस्य धारणा** यो.द.3/1 **ध्यान**-आध्यात्मिक साधना का मुख्य अंग है। धारणा की पूर्ण परिपक्वता होने पर ध्यान आरम्भ होता है अर्थात् चित्त वृत्ति का एक ही लक्ष्य पर समान रूप से बने रहना ध्यान है। **तत्रप्रत्यैकतानता ध्यानम्** यो.द.3/2 मन सब विषयों से रहित हो जाता है और साधक अपने को चिन्मात्र ब्रह्मतत्व में समझने लगता हैउसे ही ध्यान कहते हैं। **समाधि** - ध्यान की उच्चतम् अवस्था ही समाधि है। समाधि का अर्थ है जहां सब समाधान हो जाये। ध्यान के निरन्तर अभ्यास से उसमें प्रगाढता आती है। और ध्यान समाधि में परिवर्तित हो जाता है ऐसी स्थिति में केवल ध्येय मात्र की प्रतीति होती है और चित्त का निज स्वरूप शून्य हो जाता है **तदेव अर्थमात्रनिर्भासं स्वरूप शून्यमिव समाधि** योग.द.3/3

सन्दर्भ ग्रन्थ- योगदर्शन, योग दर्शन व्यास भाष्य, मनुस्मृति त्रिशिखबाह्मणोपनिषद, गोरक्ष संग्रह, घेरण्ड संहिता हठयोगप्रदीपिका आदि।

www.thearyasamaj.org



# अपरा और परा विद्या का स्वरूप

– जगदीशचन्द्र शर्मा

विद्या का संसार में बहुत बड़ा महत्व है। यथार्थ ज्ञान जिससे हो उसे विद्या कहते है। व्यावहारिक पक्ष में जो-जो कर्म वाणी द्वारा भली-भाँति सम्पादित किया जा सके वह विद्या कहलाती है। अध्यात्मपक्ष में विद्या के दो रूप माने जाते हैं अपरा विद्या व परा विद्या। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि वेदों में दो विद्या है-एक अपरा, दूसरी परा। इनमें से अपरा यह हैं कि जिससे पृथिवी और तृण से लेके प्रकृति पर्यन्त पदार्थो के गुणों के ज्ञान ठीक ठीक कार्य सिद्ध करना होता है, दूसरी परा कि जिससे सर्वशक्तिमान ब्रह्म की यथावत प्राप्ति होती है। वह परा विद्या अपरा विद्या से अत्यन्त उत्तम है, क्योंकि अपरा का ही उत्तम फल परा विद्या हैं अन्यप्रमाण भी है-

**तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्॥** ऋग्वेद/अ./अध्याय 2/व.9 मन्त्र 5।। अर्थात् व्यापक जो परमेश्वर है जिसका अत्यन्त उत्तम आनन्द स्वरूप जो प्राप्ति होने के योग्य अर्थात् जिसका नाम मोक्ष है उसको विद्वान लोग सब काल में देखते हैं। वह कैसा है कि सबमें व्याप्त हो रहा है और उसमें देश काल और वस्तु का भेद नहीं है। इसी कारण से वह पद सब जगह में सबको प्राप्त होता है, क्योंकि वह ब्रह्म सब ठिकाने परिपूर्ण हैं वह सूर्य के प्रकाश की तरह सर्वत्र व्यापक है। इसीलिए चारों वेद उसी की प्राप्ति कराने के लिए विशेष करके प्रतिपादन कर रहे हैं।

मुझडकोपनिषद् में भी ऋषि ने इसी प्रकार अपरा और परा विद्याओं का उपदेश दिया है, जो इस प्रकार है-**तत्रापरा, ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वेवेदः शिक्षा कल्पो व्याकरण निरूक्तं छन्दो ज्योतिषमिति। अथ परा यथा तदक्षरमधिगभ्यते॥** मुण्डक 1.1.5।। अर्थात् उनमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष का ज्ञान-यह 'अपरा विद्या' हैं तथा जिससे उस अक्षर ब्रह्म का ज्ञान होता हैं वह 'परा विद्या' है।

यदि यहाँ कोई शंका करे कि परा विद्या तो वेद से बाह्य (बाहर) है फिर मोक्ष का साधन कैसे हो सकती है। इसका समाधान यही है कि पराविद्या भी वेद के अन्तर्गत ही है, परन्तु केवल शब्द समूह का ज्ञान हो जाने से ही परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो पाती अपितु, अविद्या की निवृति ही परमात्मा की प्राप्ति है। 'वेद' शब्द से सर्वत्र शब्द राशि ही कही जाती है। गुरुपसत्ति आदि रूप प्रयत्नान्तर तथा वैराग्य के बिना अक्षर ब्रह्म का ज्ञान नहीं हो सकता। जिस प्रकार पुरुषार्थ चतुष्टय में धर्म, अर्थ और काम मनुष्य की पहुंच में है परन्तु मोक्ष अकेलेमनुष्य के वश में नहीं है। इसी प्रकार वेद ज्ञान मनुष्य के पुरुषार्थ के अन्तर्गत है परन्तु ब्रह्मज्ञान इसकी पहुँच से बाहर है। इसमें अन्य निमित्त की आवश्यकता होती है।

इसी प्रकार सनत्कुार ऋषि ने नारद को उपदेश दिया था। सनत्कुमार जी नारद मुनि से कहा कि जो कुछ तुम पहले जानते हो उसे कहो, फिर मैं उससे आगे तुम्हें शिक्षा दूंगा। तब नारद जी ने कहा-

ऋग्वेद भगवोऽध्येमि यजुर्वेद सामवेदमाथर्वणे चतुर्थमितिहासपुराण, पञ्चम, वेदानां वेद, पिञ्यं राशि दैव, निधि वाकोवाक्ये कायन, देवविद्या ब्रह्मविद्यां भूत-विद्यां क्षत्रिविद्यां नक्षत्रविद्या सर्पदेवजन विद्यामतर् भगवोऽयेमि।। छा. 7.1.2।।

अर्थात् मैंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का अध्ययन कर लिया है। इसके अतिरिक्त इतिहास पुराण के रूप में पञ्चम वेद, वेदों का वेद व्याकरण, श्राद्धकल्प (शुश्रुषा विज्ञान) गणित, उत्पात विज्ञान, अर्थ-शास्त्र, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, निरूक्त, ब्रह्मविद्या, भूततंत्र (भौतिक विज्ञान=पदार्थ विद्या) धनुर्वेद, ज्योतिष, सर्पविद्या (विष ज्ञान) देवजन विद्या (नृत्य-संगीत, ललित कलाएं) आदि इन सभी विद्याओं का अध्ययन कर चुका हूँ। परन्तु मैं तो केवल मन्त्रों में ही पारंगत हूँ अर्थात् शब्दार्थ मात्र ही जानता हूँ। आत्मा के सम्बन्ध में मेरी जानकारी बिल्कुल नहीं है। मैंने आप जैसे महात्माओं से सुना है-'तरति शोकाम् आत्मवित् अर्थात् जो आत्मा को जान जाता है वह दु:ख-सागर को पार कर लेता है। मैं आत्मज्ञान के अभाव में शोक सागर में डूबा हुआ हूँ। आप कृपा करके मुझे इससे पार

www.thearyasamaj.org



उतारिए।

नारद से ऐसा सुनकर सनत्कुमार जी ने कहा- हे महर्षे? तुम जो कुछ जानते हो वह सभी कुछ नाम ही है। आत्मवित् बनने के लिए नाम ज्ञान तो सीढ़ी का पहला पाया है। अतः तुम नाम की ही उपासना करो। जो व्यक्ति नामरूप ब्रह्म की उपासना करता है, उसकी जहां तक नाम की गति होती है, वहां तक इच्छानुसार गति हो जाती है।

संवाद के अन्त में सनत्कुमार जी ने कहा कि बिना 'सुख' के कोई कुछ नहीं करता, सुख मिलने से ही मनुष्य कर्म में प्रवृत्त होता है, इसलिए तुझे 'सुख' के जानने की इच्छा करनी चाहिए। 'यो वै भूमा तत्सुखम्'- जो 'भूमा' है, असीम है, निरतिशय है, महान है, वही सुख है, न अल्पे सुखमस्ति-जो अल्प है ससीम है, परिमित है, क्षुद्र है, उसमें सुख नहीं है। भूमा ही सुख है। 'भूमा' किसी में प्रतिष्ठित नहीं है, वही नीचे है, वही ऊपर है, वह पीछे है, सामने है, दाएं है, बाएं है, स एवेदं सर्वम-वही सब कुछ है। भगवान के इस रूप को देखने के बाद भक्त अपने को भूमा-रूप में ही देखने लगता है।

इस प्रकार भगवान सनत्कुमार ने नारद मुनि के मानसिक मल का मर्दन करके उसके अज्ञान अंधकार को दूर कर दिया और आत्मा के 'भूमा रूप' का दर्शन करा दिया।

**यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रवर्णभचक्षुः श्रोत्रं तदपाणि-पादं नित्यं विभु सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनि परिपश्यन्ति धीराः।** मुण्डक 1.9.6।।

अर्थात् वह जो अदृश्य, अग्राह्य, अगोत्र, अवर्ण और चक्षुः श्रोत्रादिहीन है, इसी प्रकार अपाणिपाद, नित्य, विभु, सर्वगत, अत्यन्त सूक्ष्म और अव्यय है तथा जो सम्पूर्ण भूतों का कारण है, उसे विवेकी लोग सब ओर देखते है।

**सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपाँसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।**
**यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण**
**ब्रवीम्योमित्येतत्!।।**

जिस पद का सब वेद बार-बार वर्णन करते हैं, सब तप जिसको पुकारते हैं, जिसकी चाहना में ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं, संक्षेप में वह शब्द 'ओ३म' है। यही ब्रह्म है, यही सबसे परे है। इसी को जानकर मोक्ष की प्राप्ति होती है।


**धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री**

**ऋतु अनुकूल**

**उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार**
**केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध**

| | | |
|---|---|---|
| विशिष्ट | 23.00 | रु. प्रति किलो |
| उत्तम | 28.00 | रु. प्रति किलो |
| विशेष | 45.00 | रु. प्रति किलो |
| डीलक्स | 65.00 | रु. प्रति किलो |
| सुपर डीलक्स | 120.00 | रु. प्रति किलो |

**इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।**

निर्माता :

**मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर**

**856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006**

**फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872**

www.thearyasamaj.org



# पुरुषार्थ

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

पुरुष शब्द से पुरुषार्थ बनता है अर्थात् पुरुष वही है जो पौरूष, उद्योग, परिश्रम, पुरुषार्थ किया करे। यह सभी समानार्थक शब्द हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का दूसरा मन्त्र-

**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जितीविषेच्छतं समाः।**
**एवंत्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥**

अर्थात् हे मनुष्य कर्म करते हुए ही संसार में जीने की इच्छा करो। यह गति तुम्हें विपरीत मार्ग की ओर ले जाने वाली न होगी और इस प्रकार का कर्म बन्धन का कारण न होगा। कर्म करते हुए ही संसार में जीने का आदेश देकर पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता हुआ यजुर्वेद का यह मन्त्र सम्पूर्ण गीता ज्ञान का आधार दिखाई देता है। पूरा गीता ज्ञान और विशेष रूप से कर्म-योग सिद्धांत इसी मन्त्र की विस्तृत व्याख्या है। कर्म योग की व्याख्या करते हुए योगेश्वर कृष्ण विषाद में फंसे अर्जुन को निष्काम यज्ञीय कर्म करने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि कर्म को कर्तव्य बुद्धि से करो। फल की कामना का सर्वथा बहिष्कार कर दो। फल की कामना न होने तथा फल से सम्बन्ध टूट जाने से कर्तव्य भाव से किया गया कर्म बंधन का कारण नहीं बनेगा। कर्म, परिश्रम, उद्योग, पुरुषार्थ करने की प्रेरणा अर्जुन को देते समय योगेश्वर कृष्ण कहते हैं ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' तेरा कर्म करने में ही अधिकार है। फल की इच्छा का अधिकार नहीं है। अतएव फल की कामना का परित्याग का कर्तव्य भाव से कर्म कर। इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए योगेश्वर कृष्ण कहते हैं 'योगस्थ कुरु कर्माणि संग त्यक्त्वा धनंजय, फल की आसक्ति को छोड़कर फल की प्राप्ति और अप्राप्ति में समान रहकर सम भावना में स्थिर होकर कर्म कर यही कर्म योग है यही कर्तव्य भाव से किया जाने वाला आवश्यक पुरुषार्थ है। गीता में अकर्मण्यता को पापाचार की श्रेणी में रखा गया है। निष्काम भाव से किए जाने वाले परोपकार के यज्ञीय कर्मो पुरुषार्थ को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। ऐसे कर्मो से मनुष्य बंधन में नहीं फंसता। अपितु निष्काम यज्ञीय कार्यो के प्रतिफल स्वरूप न्यायकर्ता ईश्वर सुख विशेष की प्राप्ति करवाते हैं वही हम मनुष्यों के लिए जीवन काल में ही स्वर्ग कहलाता है। इस प्रकार हम पुरुषार्थ को समस्त शुभकामनाओं की पूर्ति एवं स्वर्ग का साधन मान सकते हैं।

अथर्ववेद में पुरुषार्थ वा उद्यम करने की प्रेरणा देते हुए वेद भगवान आदेश देते हैं 'उद्यानं ते पुरुष नावयानम्' हे पुरुष तू पुरुषार्थ करता हुआ उन्नति की ओर बढ़। पुरुषार्थी को सफलता का विश्वास दिलाते हुए ईश्वर वेद में कहते हैं।

**'कृतं ते दक्षिणे हस्ते जयो ते सव्य आहितः'**

मनुष्य तू दायें हाथ से पुरुषार्थ करेगा तो सफलता तेरे बायें हाथ का खेल है। परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। ऋग्वेद में भी सौभाग्य ऐश्वर्य के लिए उद्योग वा पुरुषार्थ करने का निर्देश दिया है 'वा दृघुः सौभगाय' आलस्य छोड़कर पुरुषार्थी बनने की प्रेरणा देते हुए भर्तृहरि जी महाराज लिखते हैं 'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः' अर्थात् शरीर में बैठा हुआ आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और पुरुषार्थ के समान कोई साथी नहीं है।

महर्षि देव दयानन्द भी आर्योद्देश्य रत्नमाला में पुरुषार्थ को परिभाषित करते हुए लिखते हैं 'सर्वथा आलस्य छोड़कर उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिए मन, शरीर, वाणी और धन से जो अत्यंत उद्योग करना है, उसको पुरुषार्थ कहते हैं।' इससे भी आगे देव दयानन्द पुरुषार्थ के भेद करते हुए बहुत स्पष्ट करते हैं जो अप्राप्त वस्तु की इच्छा करना, प्राप्त का अच्छे प्रकार से रक्षण करना, रक्षित को बढ़ाना और बढ़े हुए पदार्थो का सत्य विद्या की उन्नति में तथा सबके हित में खर्च करना है इन कार्यो को पुरुषार्थ कहते हैं।'' अर्थात् पुरुषार्थ द्वारा देव दयानन्द ने न्याय धर्म युक्त क्रिया से अप्राप्त पदार्थो की प्राप्ति के लिए परिश्रम करते हुए बढ़े हुए पदार्थो को उत्तम व्यवहारों में खर्च करने की प्रेरणा दी है। आइए हम पुरुषार्थ द्वारा जीवन में सफलता प्राप्त करते जायें क्योंकि पुरुषार्थ की प्रारब्ध का निर्माण करता है।

- 922/28 फरीदाबाद

www.thearyasamaj.org



# सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

—राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

तपस्विनी शबरी द्वारा बताने पर वे दोनों भाई सुग्रीव से मिलने की इच्छा से पम्पा नामक सरोवर पर जा पहुंचे। वहां लाल व नीले कमलों की शोभा देखकर दोनों भाई व्याकुलेन्द्रिय हुए और विलाप करने लगे तथा सीता की याद करते हुए राम, लक्ष्मण से बोले कि ''हे सौमित्रे! देखो पम्पा के किनारे यह वन कैसी शोभा दे रहा है। इस शोभायमान पम्पा का दृश्य देखकर मुझे उस वैदेही का हरण पीड़ा दे रहा है। हे लक्ष्मण! भांति-भांति के जंगली वृक्ष वायु के वेग से हिलकर पृथ्वी में सुहावनी शिलाओं पर पुष्पों को बिखेर रहे हैं। चारों ओर चम्पा के वृक्षों को देख जो सुवर्ण से ढके हुए पीत वस्त्रों वाले मनुष्यों के न्यायी प्रतीत होते हैं। हे लक्ष्मण! अनेक पक्षियों की गूंज से भरा हुआ यह बसन्त सीता के न होने से मेरे शोक को बढ़ा रहा है। हे लक्ष्मण देखो इन मोरों को नाचते हुए देखकर ये मोरनियां भी नृत्य कर रही हैं। हे लक्ष्मण देख बसन्त ऋतु में पुष्प भार से समृद्ध हुए वनों में जो पुष्प खिल रहे हैं वह जानकी के बिना हमारे लिए निष्फल हैं। हे लक्ष्मण! मैं यह कह रहा हूँ कि मेरे बिना वह साध्वी सीता जीवित न रहेगी और मैं भी उस सीता के बिना जीवित नहीं रह पाऊँगा। क्योंकि हे लक्ष्मण! कमल पत्र के तुल्य नेत्रों वाली, कमलों को सदा प्यार करने वाली वैदेही को न देखते हुए मुझको अपना जीवन नहीं रूचता। जो पदार्थ उसके साथ रमनीय थे अब वे ही उसके बिना अप्रिय प्रतीत होते हैं। अगर वे रघुतम्! यदि यहां उस साध्वी का दर्शन हो तो हम यहीं स्थाई वास कर लें और अयोध्या की कभी ईच्छा भी न करें। हे लक्ष्मण! यदि मैं अयोध्या जाऊँगा तो उस मनस्विनी कौशल्या के पूछने पर सीता के विषय में क्या बताऊँगा,

इसीलिए तू जा और भरत को सब कुछ बता देना, क्योंकि मैं उस जनकात्मजा के बिना जीवित नहीं रह सकता हूँ।'' इस प्रकार अनाथ की भांति विलाप करते हुए महात्मा राम को उसका बुद्धिमान भाई लक्ष्मण यह वचन बोला कि ''हे राम! किसी पदार्थ में अति अनुरक्त होना दुःख का मूल है। जैसे तेल में भीगी हुई बाती जल जाती है। हे तात्! यदि रावण पाताल को चला जावे अथवा उससे भी आगे चला जावे तब भी जीवित नहीं रहेगा, हे आर्य उत्साह बड़ा बलवान होता है, उत्साह से बढ़कर कोई बल नहीं, उत्साह वाले को लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं। सो हम उत्साह मात्र को ही अपना आश्रय करके जानकी को प्राप्त करेंगें।'' इस प्रकार लक्ष्मण द्वारा शिक्षा देने पर राम को धैर्य प्राप्त हुआ और फिर वे दोनों भाई पम्पा से पार हो गए।

टिप्पणी: यहां भी श्रीरामचन्द्र जी बार-बार अवसाद को प्राप्त हो रहे हैं। इस अवसाद की स्थिति से निकालने में उसका छोटा भाई लक्ष्मण भरसक प्रयास करता हुआ दिखाई देता है। पम्पा सरोवर की मनोहर छटा को देखकर श्रीराम एक बार फिर अवसाद को प्राप्त हो गए जिसका मुख्य कारण तो यही था कि इन मनोहर दृश्यों को देखकर उसको सीता का और भी स्मरण हो आया। उत्साह मात्र को सहारा बनाने की लक्ष्मण की शिक्षा से राम कुछ उत्साह में आए। इस छोटे से प्रसंग में भी बाबा तुलसीदास जी लीला-लीला की रट लगा रहे हैं। यहां एक बात तो प्रमाणित होती है कि सीताजी का हरण हुआ तो उस समय बसन्त ऋतु


## साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

**अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।**

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

www.thearyasamaj.org



थी। (देखहु तात् बसन्त सुहावा। प्रिया हनि मोहि भय उपजावा।।) वाल्मिकी रामायण में भी बसन्त ऋतु का उल्लेख है। आपकी जानकारी के लिए बाबा तुलसीदास जी की एक पंक्ति का उल्लेख कर रहे हैं। क्रोध मनोज लोभ मद माया। छूटहि सकल राम की दाया।। अर्थात् रामचन्द्र जी की कृपा से समस्त कलेश अर्थात क्रोध, मद, लोभ और लालच इत्यादि सब दूर हो जाते हैं जबकि स्वयं श्री रामचन्द्र जी अवसाद में आकर साधारण पुरुषों की भांति विलाप करते हैं। रामचरित मानस में यहां नारद जी का जिक्र है जो श्रीराम को अन्तर्यामी कहकर एक वर मांगते हैं। जबकि वाल्मिकी रामायण में प्रारम्भ में ही नारद जी महर्षि वाल्मिकी के पूछने पर श्रीरामचन्द्र जी को नर कहकर सम्बोधित करते हैं। आप सभी जानते हैं कि तुलसीदास जी को वैराग्य उनकी धर्मपत्नी की प्रेरणा से ही हुआ था। लेकिन जब सन्त बने तो हाथ धोकर नारी के पीछे ही पड़ गए। इसी प्रसंग में भी वे क्या कहते हैं देखिए:- **सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता! मोह बिपिन कहुं नारि बसंता। जप, तप, नेम जलाश्रय झारि। होई ग्रीसम सोषई सब नारी।।** अर्थात् पुरान व सब सन्तों का मानना है कि जैसे ग्रीष्म ऋतु में तलाव सूख जाते हैं इसी तरह से नारी के संग से यम, नीयम, तप व जप सब समाप्त हो जाते हैं और भी आगे लिखते हैं:- ''नारी निबिड रजनी अंधियारी'' वाल्मिकी रामायण में कहीं भी यह वर्णन नहीं है कि श्रीरामचन्द जी परमपिता परमात्मा के अवतार थे। श्री रामचन्द्र जी को परमात्मा का अवतार मानना ऐसे ही है जैसे बिना पंख के पक्षी को आकाश में उड़ाना, गागर में सागर हो भरना तथा आकाश को चटाई की तरह लपेटने जैसा है। परमात्मा का स्वरूप अखण्ड है इससे तो वह खण्डनीय हो जायेगा। हाँ इतना अवश्य है कि कुछ पवित्र जीव आत्माएं लोकहित में आश्चर्यजनक कार्य कर जाती हैं जिन्हें हम अति श्रृद्धा व अज्ञानतावश परमात्मा का अवतार स्वीकार कर लेते हैं। श्रीराम व योगेश्वर कृष्ण आदि को महापुरुष मानने में जहां सत्य का पालन होता है वहां हमारे पूर्वजों का सम्मान भी प्रकट होता है। हमें अपने पूर्वजों पर गर्व भी होता है। रामायण के अन्दर महाभारत की अपेक्षा कम प्रक्षेप है लेकिन फिर भी कई श्लोको में श्रीरामचन्द जी को मूर्ति पूजा करने वाला भी बताया गया है। यदि वह स्वयं ईश्वर थे तो पूजा किसकी करते थे? इसी विषय पर ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के 11वें समुल्लास में लिखते हैं-

प्रश्न:- रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापित किया है? जो मूर्ति पूजा वेद विरुद्ध होती तो रामचन्द्र जी मूर्ति स्थापना क्यों करते? और वाल्मिकी रामायण में क्यों लिखते?

उत्तर:- रामचन्द्र के समय में उस लिंग व मन्दिर का नाम चिन्ह भी न था। किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ राम नाम राजा ने मन्दिर बनवा, लिंग स्थापित कर उसका नाम रामेश्वर रख दिया।

वर्तमान समय में भी रामायण की कथा करना एक व्यापार बन गया है। टी.वी. या अन्य माध्यम से कथा में नमक-मिर्च लगाकर उसमें अपनी तरह से तरह-तरह के मसाले डालकर अति रूचिदायक बना श्रोताओं के सामने रखते हैं। जिससे उनकी दुकानदारी खूब चलती है लेकिन इसकी लाभ-हानि की उन्हें कोई परवाह नहीं। हमें सावधान व सर्तक होना पड़ेगा नहीं तो हमारा वास्तविक इतिहास व संस्कृति जीवित नहीं रह पायेगी।


## साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195



## सम्पर्क करें

**पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :**

**राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084**

www.thearyasamaj.org


यज्ञ-योग-साधना के लिए बहादुरगढ़ चलो! ॥ ओ३म् ॥ यज्ञ-योग साधना के लिए बहादुरगढ़ चलो

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद-यज्ञ-योग साधना केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का
47वां स्थापना दिवस-वार्षिकोत्सव समारोह पर

# ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं
# निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर

(शनिवार दिनांक 21 सितम्बर से बुधवार दिनांक 2 अक्टूबर 2013 तक)

**सानिध्य-** पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आश्रम
**ध्यान योग निर्देशक एवं प्रवक्ता-** आचार्य राजहंस मैत्रेय, आत्मशुद्धि आश्रम
**आसन प्राणायाम प्रशिक्षण-** योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स, विशिष्ट ट्रस्टी आश्रम

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य विद्यादेव, पूर्व प्राचार्य टंकारा
वेदपाठ : गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा
मुख्य यज्ञमान : श्रीमती प्रीति देवी, श्रीमती मूर्ति देवी
भजनोपदेशक : सत्यपाल जी मधुर पंजाबीबाग, दिल्ली, पं. रमेशचन्द्र आर्य झज्जर, हरियाणा
श्रीमती रामदुलारी बंसल एवं आश्रम के ब्रह्मचारी
प्रमुख वक्ता : डॉ. मुमुक्षु जी आर्य नोएडा, आचार्य खुशीराम जी (वेद प्रचार अ. आर्य प्र. सभा दिल्ली)
पं. रामजीवन जी योगाचार्य, आर्य तपस्वी सुखदेव वर्मा (दिल्ली)
स्वामी रामानन्द सरस्वती, आचार्य रवि शास्त्री

कार्यक्रम समय :प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक ध्यान, 6 बजे से 7 बजे तक यौगिक क्रियाओं का प्रशिक्षण
प्रातः 8.00 से 11 बजे तक : यज्ञ-भजन-उपदेश, सायं 3 से 6 बजे यज्ञ-भजन-उपदेश,

www.thearyasamaj.org


रात्रि 8 से 10 तक भजनोपदेश और व्याख्यान तथा मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन

**आर्य महिला जागृति सम्मेलनः– सोमवार 30 सितम्बर सायं 3 बजे से**

**योग सम्मेलनः– मंगलवार 1 अक्टूबर प्रातः 10 बजे से**

**चरित्र निर्माण सम्मेलनः– मंगलवार 1 अक्टूबर सायं 3 बजे से**

## पूज्य आत्मस्वामी जन्मोत्सव एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह

बुधवार दिनांक 2 अक्टूबर, 2013 यज्ञ पूर्णाहुति प्रातः 9 बजे तत्पश्चात् स्थापना समारोह

आर्यसमाजों के अधिकारी एवं व्यक्तिगत यजमान बनने के इच्छुक इस शुभ अवसर पर सादर आमंत्रित हैं। भारतीय वेशभूषा में यजमान आसनों को सुशोभित करने के लिए शीघ्र अपना नाम यजमान सूची में लिखवायें।

बाहर से आने वाले माताओं/बन्धुओं/साधकों/याज्ञिकों के लिए भोजन एवं निवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। आप अपने पधारने की सूचना 15 सितम्बर से पूर्व शीघ्र प्रेषित करें, जिससे आपके निवास की व्यवस्था उत्तम की जा सके। ऋतु अनुसार बिस्तर अवश्य साथ लावें। अधिक से अधिक संख्या में इष्टमित्रों सहित पधारकर इस विशाल आयोजन से लाभ उठावें। आश्रम बस स्टाप के समीप दिल्ली रोड़ पर स्थित है।

–: निवेदक :–

विक्रमदेव शास्त्री, व्यवस्थापक आश्रम
चलभाष : 9896578062

वानप्रस्थी ईशमुनि, संयोजक
चलभाष : 9812640989

सत्यानन्द आर्य
प्रधान (ट्रस्ट)

दर्शनकुमार अग्निहोत्री
मन्त्री

**आत्मशुद्धि आश्रम ( पंजीकृत न्यास ) बहादुरगढ़–124507, जिला झज्जर, हरियाणा**

दूरभाष : 01276-230195, चलभाष : 09416054195

www.thearyasamaj.org



# अण्डा सेवन तो नुकसानदायक है ही

**- रामनिवास लखोटिया**

पिछले वर्षो में कई टीवी चैनलों में यह विज्ञापन देखने को मिला है कि "सण्डे हो या मन्डे, रोज खाओ अन्डे"। यह विज्ञापन स्वास्थ्य की दृष्टि से कितना भ्रामक है इस बारे में वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर आपके स्वास्थ्य की सुरक्षा हेतु आपका सही मार्गदर्शन प्रस्तुत लेख में किया गया है। यह निर्विवाद है कि हर व्यक्ति इस बात के लिए पूर्ण स्वतन्त्र है कि वह क्या खाये और क्या न खाये। किन्तु अच्छे स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से या भयानक बीमारियों की रोकथाम के लिए कुछ खाद्य पदार्थो का सेवन हानिकारक हो तो आपको अपने स्वास्थ्य की रक्षा हेतु चाहिए कि आप विवेक पूर्वक ऐसा खाद्य पदार्थ न लें। आप निम्न तथ्यों से भलीभांति जान पायेंगे कि अन्डा जहां स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है वहां वह मांसाहार भी है। इसलिए इसका सेवन हर दृष्टि से आपके लिए उचित नहीं है। तो आईए अन्डों के बारे में कुछ प्रमुख तथ्यों पर हम दृष्टिपात करें।

**1. अण्डा सेवन अहिंसा एवं करूणा के विपरीत:-** यह बहुधा सुनने में आता है कि अनिशेचित अण्डे शाकाहारी हैं। लेकिन यदि हमें मालूम हो जाए कि उनके उत्पादन की विधि कितनी क्रूरता से परिपूर्ण है और भारतीय मूल्यों जैसे, अहिंसा और करूणा के विपरीत है तो बहुत से लोग अण्डा सेवन बन्द देंगे। अमेरिका के विश्वविख्यात लेखक जॉन राबिन्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'डाइट फॉर ए न्यू अमेरिका' में लिखा है कि अण्डों की फैक्ट्रियों में स्थापित किए हुए पिंजड़ो में इतनी अधिक मुर्गियां भर दी जाती है कि वे पंख भी नहीं फड़फड़ा सकती और तंग जगह की वजह से वह आपस में चोंचे मारती है, जख्मी होती हैं, गुस्सा करती हैं और कष्ट भोगती हैं। जब मुर्गी को 24 घंटे लोहे की सलाख पर बैठना पड़ता है तब एक विशेष मशीन से एक ही रात में लगभग 3000 मुर्गियों की चोंच काट दी जाती है और गरम-गरम आग से तपते हुए लाल औजारों से मुर्गी के पंख भी काट दिए जाते हैं। आप समझ सकते हैं कि जल्दी से अण्डा उत्पन्न का तरीका कितना हिंसात्मक है।

**2. अण्डों से कई बीमारियां:-** हाल ही में हुआ बर्ड फ्ल्यू और सालमनोला बीमारी ने समस्त विश्व में यह प्रमाणित कर दिया है कि मुर्गियों को होने वाली कई बीमारियों के कारण अण्डों से यह बीमारी अण्डा खाने वाले मनुष्य में प्रवेश कर जाती है। अण्डा सेवन करने वाले व्यक्तियों को यह भी नहीं मालूम कि इसमें हानिकारक कोलेस्ट्राल की बहुत अधिक मात्रा होती है। अण्डों के सेवन से आंतो में सड़न और आंतो में टी.वी. आदि की आशंकाएं बढ़ जाती हैं। अण्डे की सफेद जर्दी से पैप्सीन इंजाईम के विरुद्ध प्रतिक्रिया होती है। कैथराइन निम्मो तथा डॉ. जे. एम. विलिंकज ने एक सम्मिलित रिपोर्ट में कहा है कि अन्डा ह्मदय रोग और लनकवे, आदि के लिए जिम्मेदार है। यह बात 1985 के नोबुल पुरस्कार विजेता डॉ. ब्राउन और डॉ. गोल्डस्टीन ने कही है कि अण्डों में सबसे अधिक कोलेस्ट्रोल होता है जिससे उत्पन्न हृदयरोग के कारण बहुत अधिक मौतें होती हैं। इंगलैंड के डॉ. आर.जे. विलियम ने कहा है कि जो लोग आज अण्डा खाकर स्वस्थ रहने की कल्पना कर रहे हैं वे कल लकवा, एग्जिमा, इनजाइना जैसे रोगों के शिकर होंगे। फिर अन्डे में फाईबर नहीं होता और कार्बोहाईड्रेट जो शरीर में स्फूर्ति देता है वह भी "शून्य" होता है।

**3. अण्डों में पौष्टिकता एवं ऊर्जा की कमी:-** यह भ्रम बड़ी तेजी से फैलाया जा रहा है कि शाकाहारी खाद्यान्नों की तुलना में अण्डे मे अधिक प्रोटीन है। लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन के निम्न तुलनात्मक चार्ट से यह ज्ञात होता है कि प्रोटीन, खनिज लवण, एवं कैलोरी आदि की दृष्टि से कौन सा आहार हमारे लिए उपयुक्त है:-

**4. कोई भी अन्डा शाकाहारी नहीं होता:-** प्रचार माध्यमों के कारण कुछ वर्षो से शुद्ध शाकाहारी परिवार के नवयुवक अण्डों का सेवन करने लगे हैं, क्योंकि अनिशेचित अण्डों को 'शाकाहारी' नाम देकर एक भ्रम जाल फैलाया गया है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि अनिशेचित अण्डे किसी भी प्रकार से शाकाहारी नहीं होते क्योंकि न तो वे पेड़ो पर उगते हैं और न किसी पौधे पर बल्कि वे सब मुर्गी के पेट से उत्पन्न होते हैं। 1971 में मिशीगन यूनिवर्सिटी, अमेरिका के वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया था कि संसार का कोई भी अण्डा निर्जीव नहीं है। चाहे निशेचित हो या अनिशेचित। अण्डे के ऊपरी भाग पर 15000 सूक्ष्म छिद्र

www.thearyasamaj.org



होते हैं जिनसे अनिशेचित अण्डे का जीवन श्वास लेता है।

**5. होटलों के खाने में क्या सावधानी बरतें:-** इस बात का ध्यान रखा जाए कि 'एशियन सलाद' जिसमें अण्डे का पीला भाग मेयोनीज होता है, नहीं खाएं बल्कि उसके स्थान पर क्रीम वाला सलाद ही खायें। इसी प्रकार जन्मदिन आदि के पार्टी में 'एगलैस केक'' ही निर्मित करवायें और उसी का सेवन करें।

**6. विश्व एवं भारत के सुप्रसिद्ध शाकाहारी व्यक्ति:-** अरस्तु, प्लेटो, सुकरात, लियोनार्दो दाविंची, पाइथेगोरस, शेक्सपीयर, वर्ड्सवर्थ, लियो, टॉलस्टॉय, जार्ज बरनार्ड शॉ, न्यूटन, बैंजामिन फ्रैंकलिन, डार्विन, चर्चिल, आइस्टिन, आदि। भारत के हैं- राम, कृष्ण, गौतम, बुद्ध, महावीर, तिरूवल्लुवर, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, नानक, तुलसीदास, कबीर, मीराबाई, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी, गामा पहलवान, सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री, अब्दुल कलाम, अमिताभ बच्चन आदि।

- एस-228, ग्रेटर कैलाश, भाग-2, नई दिल्ली

# आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
66. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
67. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली

www.thearyasamaj.org



# प्रभु प्यारे से जिसका संबंध है उसको हर दम आनन्द ही आनन्द है

- प्रो. ओमकुमार आर्य

आज प्रत्येक व्यक्ति मानसिक तनाव का असह्य भार ढोता हुआ जीवन जी रहा है, जी नहीं रहा बल्कि जीने की मजबूरी उसकी नियति बन चुकी है। ऊपर से लिपे पुते, चिकने चुपड़े चेहरे अन्दर कितनी कुरूपता और गंदगी छुपाये बैठे हैं ये तो वे स्वयं जानते हैं अथवा सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी परमात्मा जानता है। हम तो अंदर के विकारों, गंदगी और भद्देपन का केवल अनुमान भर लगा सकते हैं और अनुमान भी इस आधार पर कि व्यक्ति का दिखाई देने वाला प्रत्यक्ष जीवन भद्देपन, कुरूपता, विकृतियों तथा घिनौनी हरकतों से अटा पड़ा है। बाहर का यह दुर्गन्धियुक्त कीचड़ स्पष्ट बता रहा है कि अंदर बहुत कुछ दाल में काला है। काण्ड, स्कैण्डल, घपले, घोटाले तो पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि 'कुछ काला है' कहने से काम नहीं चलने वाला, यूं कहा कि मानसिक जगत् सारे का सारा अंधकारपूर्ण है, सारी दाल ही काली है। आदमी स्वयं भी बेचैन है, परेशान है, तनाव का अड्डा बना हुआ है तथा दूसरों को भी बेचैनी, परेशानी, तनाव बांटता फिर रहा हैं।

ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है कि मानव ने अज्ञान और अहंकार वश उस प्यारे प्रभु से अपना नाता तोड़ लिया है और जोड़ लिया है सभी प्रकार से अपने आपको भोगवाद से, भौतिकवाद से, इंद्रियसुख से। इन सबके मक्कड़जाल में उलझा वह बुरी तरह छटपटा रहा है और दु:ख तो यह है कि अपनी इसी छटपटाहट और बेचैनी को जीवन का वास्तविक सुख मान रहा है। धातु के सिक्कों की चमक से उसकी आंखे चुंधिया गई हैं, वह दिग्भ्रमित हुआ-हुआ इधर-उधर दौड़ रहा है, अपनी शक्तियों का ह्रास कर रहा ह और फिर दुर्भाग्य यह है कि मृगतृष्णा की अंधी, लक्ष्यहीन और अंतहीन दौड़ को आज का अभागा मानव सही दिशा में सही दौड़ समझ रहा है। परिणाम सामने है-भयंकर शारीरिक रोग, मानसिक विकास, सामाजिक जीवन में डरावनी विकृतियां।

क्यों, सिर्फ इसलिये कि रूपये, डॉलर, पाउण्ड, यूरो आदि को ही हमने अपना माई, बाप बना लिया और असली सकल सुखदाता, आनन्दस्त्रोत प्यारे प्रभु की पूरी तरह भुला दिया है। वेद तो सृष्टि के आदि से ही पुकार-पुकार कर कह रहा है कि प्रकृति के मोहपाश से बाहर निकल ऐ भोले मानव, ईश्वर और ईश्वर के काव्य की तरफ देख, तेरे सारे दु:ख, दर्द, बुढ़ापा, जीर्णता, शीर्णता सब दूर हो जायेंगे-

**ओ३म् अंति सन्तं न जहात्यन्ति संत न पश्यति।**
**देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति॥**

अथर्व 10.08.32

बस उसको अपनाने भर की देर हैं, सारी हारी, बीमारी, आधि, व्याधि, रोग, शोक, चिंता, तनाव, सब छूमंतर हो जायेंगे और जीवन में आनन्द का सागर ठाठें मारने लग जायेगा। उस आनन्दधन से संबंध जुड़ा नहीं कि आनन्द ही आनन्द की अनुभूति तुरंत प्रारंभ हो जायेगी। अगला वेद-मन्त्र इससे भी बड़ी गारण्डी देता है कि ईश्वर को सच्चे हृदय से पुकारेंगे तो वह अमृतवर्षा करके तुम्हें सराबोर कर देगा।

**ओ३म् अजीतयेऽहतये पवस्य स्वस्तये सर्वतातये बृहते।**
**तदुशन्ति विश्व इमे सखायस्तदहं वश्मि पवमान सोम॥**

ऋ 9.96.4

अर्थात् हे सोम परमेश्वर आप हम सब पर चारों ओर से अपने सोम-आनन्द की जमकर वृष्टि करो, हम सब यही चाहते हैं। जीवन के तपते रेगिस्तान में शीतल सुख 'नखलिस्तान' यदि कहीं है तो वह आपकी भक्ति, आपकी गोद और आपकी शरण ही तो है। वह ब्रह्म=ईश्वर ही हमारा दु:खत्राता है, रक्षक है, वह कवच बनकर सदा, सर्वदा और सर्वत्र हमारी रक्षा करता है-

**'ब्रह्म वर्म ममान्तरम्'** (मंत्रांश अथर्व 1.19.4)

ईश्वर स्तुति प्रार्थनापासना के आठ मन्त्रों में जो तीसरा मन्त्र है वह भी इसी ओर इंगित करता है कि जो प्रभु के गुणानुवाह करता है, जो उसकी छाया में आ जाता है अर्थात उसकी भक्ति करता है वह अमृत को पा जाता है, अमृत तत्व प्रत्येक ताप, संताप को हर लेता है और मनुष्य चिन्तामुक्त, आनन्दपूर्ण जीवन विताता है। मन्त्र स्पष्ट कहता है-

'यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्यु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ अथर्व 4.2.1.

www.thearyasamaj.org



यदि उससे दूरी बनाई अर्थात् उसकी भक्ति नहीं की तो मृत्यु आदि महा दु:खों का सामना अवश्यमेव करना पड़ेगा। उससे जिसने अपने ताप जोड़ लिये वह बदले में भक्त की हृत्तन्त्री के तारों में ऐसी मधुर झंकार भर देता है कि उस स्वर्गिक मधुरता में जीवन की सारी कटुता, कलुष, क्लेश डूबकर सदा के लिए विलीन हो जाते हैं और जीवन सुख, शांति, आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है। यह होता तब है जब हम प्रभु से संबंध जोड़ते हैं और दुनिया के झूठे बखेड़ों से नाता तोड़ लेते हैं। ऋषि, मुनियों, भक्तों, साधकों का सुखी, संतुष्ट, हंसता, मुस्कुराता जीवन इस तथ्य का साक्षी है कि जिसको प्रभु की आनन्दमयी गोद मिल गई उसकी सारी व्यथा-कथा इस तरह गायब हो जाती है जैसे सूर्य की धूप के स्पर्श से ओस के कण गायब हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द की जब यही अत्यंत शांत और चिंतारहित मुखमुद्रा, जब वे मृत्यु शैया पर थे और मृत्यु अत्यंत सन्निकट थी कि अब आई और अब आई, गुरुदत्त ने देखी थी तो वे तुरंत समझ गये थे कि महर्षि उस जगन्माता की गोद में बैठे हैं जो मृत्यु की पहुँच से परे है, दुनिया का कोई दु:ख दर्द उस जगदम्बा के पास फटक तक नहीं सकता। इसीलिए तो महर्षि उसकी गोद में निश्चित लेटे हुए थे, मृत्यु भय से एकदम बेखबर, बेफिक्र, मोक्षधाम के पथ पर निकलने की प्रतीक्षा में क्योंकि उन्होंने अपना नाता परमपिता परमेश्वर से जोड़ रखा था।

'सामवेद' तो और भी भावविभोर होकर गा उठता है कि हे प्रभु हम तेरी शरण में आये हैं, तू मधु, मादक धारायें बनकर हमारे जीवन में बह और हमें मधुरता, मादकता, आनन्द, प्रमोद में आपाद-मस्तक आप्लावित कर दे।

**ओ३म् स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोमधारया।**
**इन्द्राय पातवे सुत:॥** सामवेद उत्तरार्चिक 1.15.1

इस प्रकार ईश्वरीय वेदवाणी, वेदानुकूल अन्य सभी ग्रन्थ, समस्त आर्ष साहित्य और भक्त कवियों की रचनायें भी यही कहती हैं कि 'प्रभु प्यारे से जिसका संबंध है, उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।' यह तो थी सुखद और अत्यंत आनन्दमयी स्थिति उन भाग्यशाली लोगों की जो प्रभु से अपना नाता जोड़ हुए हैं। साथ ही वेद उन लोगों की दु:खद स्थिति का चित्रण भी करता है जो प्रभु जैसे मित्र को त्यागकर, उससे एकदम विमुख होकर जीवन जीते हैं। आइए देखें कि वेद-मन्त्र ऐसे व्यक्तियों को जिन्होंने कि ईश्वर को त्याग दिया हुआ है, क्या चेतावनी देता है-

**ओ३म् यस्तित्याज सचिविदं सखाय न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।**
**यदीं श्रृणोत्यलकं श्रृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्।**

ऋग्वेद 10.71.6

वेद कहता है कि जो व्यक्ति सर्वहितकारी सकल सुखदाता प्यारे प्रभु को त्याग देता है वह इतना बेभरोसे का जीवन जीता है कि उसकी वाणी में भी कोई भाग शेष नहीं रह जाता। उस पर कोई विश्वास करने को तैयार नहीं होता। ऐसा व्यक्ति जो कुछ भी सुनता है, बेकार सुनता है और न ही वह सत्कर्म के सुपथ को कभी जान पाता है। उसका सारा भौतिक, आध्यात्मिक विकास, उसकी सुख, समृद्धि सब रूक जाती है, उसकी प्रसन्नता-उल्लास, आंतरिक सुख-चैन सब नष्ट हो जाते हैं। इस मन्त्र का अर्थ त्रिआयामी है अर्थात्-

1. जो सांसारिक सन्मित्र को त्यागता है उसका बुरा हाल होता है।

2. जो ईश्वर की कल्याणी वेदवाणी जैसे हितैषी मित्र को त्याग देता है उसकी भी दुर्दशा होती है।

3. और जो प्यारे प्रभु को त्याग देने की भारी भूल करता है उसका तो सर्वस्व ही चौपट हो जाता है।

सन्देश सीधा सा है कि जो प्रभु से जुड़कर जीता है उसको हर दम आनन्द ही आनन्द है और जो उसको त्यागकर जीवन जीने की भूल करता है उसको न सुख मिलता है, न शांति, न आनन्द, न विश्वसनीयता, न यश। वह तो दु:खो से भरा नारकीय जीवन जीता है।

अत: यदि हम वास्तव में अच्छा, सुखी और तनावमुक्त जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें उस परमपिता परमेश्वर, उस दु:खहर्ता, सुखदाता प्यारे प्रभु से अपना संबंध जोड़ें, तुरंत जोड़े, त्रिविध तापों से, रोजाना के तनाव से मुक्ति पायें। स्वस्थ सुखी और शांत जीवन का वरदान प्रभु से प्राप्त करें। ऐसा वरदान दुनिया की अन्य कोई ताकत हमें नहीं दे सकती। आइये, मस्ती से गुनगुनायें और एक सफल, सार्थक एवं सुखी जीवन बितायें- **हम आये शरण तिहारी, प्रभो राखो लाज हमारी, सब कष्ट क्लेश हर लीजो, खुशियों से जीवन भर दीजो।** हे कृपालु इतनी कृपा करना, निज भक्ति का वर हमें प्राप्त रखना।

जवाहर नगर, पटियाला चौक, जींद, हरियाणा

www.thearyasamaj.org



# प्रभु से मांगना सीखिए

**- अभिमन्यु कुमार खुल्लर**

हम सब याचक हैं, मांगते हैं। मांगना, याचना करना हमारी आदिम मनोवृत्ति है। परमपिता परमात्मा से, परमशक्ति से मांगना मानव की आदिम प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से सिद्ध है। हम आपस में मांगते हैं पर परमात्मा से मांगने में हम सब एक हैं वहाँ ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का कोई भेद नहीं। सब अपने-अपने स्तर के अनुसार अपनी मनोकामना, याचना के रूप में प्रभु के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। चूंकि प्रभु चैतन्य हैं, अन्तर्यामी हैं, अतः सबकी याचनाएं, उनके द्वारा प्रस्तुत करने के पूर्व ही जान लेते हैं। सरल भाषा में कहिए सबकी प्रार्थनाएं सुन लेते हैं।

सृष्टि रचयिता, नियन्ता एवं सर्वशक्तिमान प्रभु की सत्ता समझने से पहिले जरा मेरे साथ चलिए। विश्व की अथाह सम्पदा के ज्ञात धनाढ्यों में बिल गेट्स, अरब अमीरात के सुलतान, लक्ष्मी मित्तल और भारत के अम्बानी बंधु, टाटा, बिडला। इनमें से कोई एक धनपति प्रातःकालीन सूर्योदय की स्वर्णिम प्रभा का आनन्द उठाने कन्याकुमारी के तट पर भ्रमण कर रहा है। शीतल मन्द समीर ने वातावरण को बहुत ही सुखद बना दिया है। इस वातावरण ने कुछ समय के लिए ही सही, उसकी चिन्ताओं का भार हल्का कर दिया है। मन प्रफुल्ल है। इतने में ही एक भिखारी टकरा गया। बाबा, भीख दो? बाबा नाम से सम्बोधित धनिक ने पूछा, क्या चाहिए? उत्तर-मिला चवन्नी, अठन्नी का जमाना चला गया। एक रूपया लूंगा। बाबा ने कहा-कुछ और? भिखारी समझा कुछ नहीं देना चाहता इसलिए कुछ और कह रहा है। कहा-मैं एक रूपया मांगता हूँ, देना हो तो दे दो। लक्ष्मी-मित्तल, बिल गेट्स सोचता है कि इस अज्ञानी को नहीं मालुम कि मैं कौन हूँ? क्या कुछ दे सकता हूँ? और यह एक रूपया ही मांग रहा है। यह तो आज की स्वर्णिम बेला में कुछ भी, लाख दो लाख मांगता तो भी, मैं एक क्षण सोचे बिना इसे दे देता। बाबा ने एक रूपया दे दिया। मांगने वाला खुश, देने वाला नाखुश। प्रभु से मांगने में हम समस्त मानवों की यही स्थिति रहती है। हम सब अपनी-अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए ही प्रभु से याचना करते है और नहीं जानते कि वह क्या कुछ दे चुका है अथवा दे सकता है।

प्रभु के समक्ष हम मानव क्या याचना करते हैं, जरा देखिए तो- कुम्हार याचना करेगा, सूरज तपता रहे। जितना ज्यादा तपेगा उतनी जल्दी उसके मिट्टी के बर्तन सूखेंगे। किसान प्रभु से मांगेगा कि घनघोर वर्षा हो, उसकी जोती-बोई फसल लहलहा जावे। मुकदमें के दोनों पक्षधर मांगेगे कि उसकी विजय हो। हत्या, बलात्कार, जघन्य सामूहिक हत्याओं के जिम्मेदार निरकुंश तानाशाह भी अपनी जिन्दगी की भीख मांगते होंगे? आजकल के राजनेता बड़े जोश-खरोश से यज्ञ-याग, भजन-पूजन, कर याचना करते हैं कि प्रभु उनकी पार्टी की जीत हो और उन्हें जनता का खून-चूसने का मौका एक बार और मिले। सन्तानहीन महिला, लड़ाई होने पर पड़ोसन की नवागता पुत्र वधु को शाप देती हुई प्रभु से प्रार्थना करेगी कि यह निपूती मर जाय, इसके वंश का नाश हो जाय। विद्यार्थी अध्ययन न करने पर भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने की मांग रखेंगे। हिन्दू मंगतों की स्थिति बड़ी दयनीय है, वह यह भी नहीं देखते कि किस देवता से क्या मांगना चाहिए। यदि युवतियाँ हनुमान जी से प्रेम में सफलता या उत्तम वर पाने की मांग रखें तो हनुमान जी ऐसे संकट में पड़ेंगे कि संकटमोचन उपाधि तत्काल उतारने को जी चाहेगा। यही स्थिति तब भी होगी जब कोई विवाहिता महिला पुत्र मांग बैठे।

यही नहीं किसी एक देवता पर भी हिन्दू भक्त को विश्वास नहीं है। यदि हनुमान जी प्रसन्न नहीं होंगे तो राम जी, यदि राम जी भी नहीं तो सीता, राधा, कृष्ण शिव-पार्वती कोई तो होगा, तैंतीस करोड़ हैं। यदि इनसे भी काम नहीं बना तो पीर साहब हैं, वह (हिन्दू भक्त) यह भी नहीं सोचता कि जिन पीर साहब से वह मांग रहा है, उनका शव तो खुद कब्र में पड़ा कयामत का इंतजार कर रहा है। बहुतायत हिन्दू मूर्तिपूजक तो हैं ही, शव पूजक भी सिद्ध हैं। गुरुद्वारे में भी तो अरदास लगाई जा सकती है। जालंधर के एक गुरुद्वारे में विदेश यात्रा के इच्छुक भक्तों को सौ

www.thearyasamaj.org



रूपये से लेकर पांच सौ तक का वायुयान चढ़ावे में देने पर गुरुग्रंथ साहिब अवश्य मनोकामना पूरी करेंगे-आश्वासन दिया जा रहा है। प्रेम-प्रसंगों की तो बात ही छोड़िये। ऐसी असंख्य मांगे प्रभु के सामने प्रस्तुत की जाती हैं।

ऐसी मांगों की पूर्ति के करने के लिए भगवान को रिश्वत देने का प्रस्ताव भी बड़ी सुन्दरता से किया जाता है। यह तो आम प्रार्थना है। हे प्रभु! यदि आप मेरी याचना स्वीकार कर देंगे तो, मांग पूरी कर देंगे तो आपको सवा किलो का प्रसाद चढ़ाऊँगा/चढ़ाऊँगी। यही सवा किलो से सवा मन, फिर प्रसाद का प्रकार परिवर्तन चढ़ावा-चादर से लेकर चांदी, सोना, हीरे जवाहरात आदि के रूप में होता है। इसी तरह मन्दिरों, दरगाहों में, चर्चो में अपार सम्पत्ति इकट्ठी होती जा रही है। भगवान के पास पहुँचती नहीं दिखती। ठीक, उसी प्रकार जिस प्रकार श्राद्ध पक्ष में पण्डितों, कौवों को खिलाया हुआ पितरों तक स्वर्ग पहुंचता नहीं दिखता।

हजार में से कुछेक की मनोकामना पूरी हुई तो हजार मुख से प्रचारित होगा कि ऐसी उल्टी-सीधी मनोकामना की पूर्ति भी भगवान करता है, यदि यह कामना/याचना ''सच्चे मन'' से की जावे। ''सच्चे मन का तत्व'' इसलिए प्रविष्ट करा दिया जाता है कि यदि कामना की पूर्ति नहीं हुई तो आरोप जड़ा जा सकता है कि तुम्हारा मन ''सच्चा'' नहीं था। गणेश जी ने भी दुग्धपान किसी आर्यसमाजी से नहीं किया होगा क्योंकि इस काम के लिए उसका मन सच्चा नहीं माना जायेगा। यह व्यक्ति आर्यसमाजी है, जानकर किसी गणेश भक्त ने उस आर्यसमाजी से अनुरोध भी नहीं किया होगा कि वह गणेश प्रतिमा को दुग्धपान करावे। गणेश जी ने दुग्धपान किया था, इसका कारण Surface Tension को बताते हुए, वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का प्रयास जिस भारतीय वैज्ञानिक ने किया था वह भी संस्कारवश पौराणिक परिवार में ही उत्पन्न हुआ होगा।

थोड़ा व्यतिरेक हो गया दिखता है लेकिन ऊटपटांग कामनाओं की पूर्ति ईश्वर करता है या नहीं इसका स्पष्ट विवेचन आवश्यक प्रतीत हुआ।

वास्तविकता ऐसी नहीं है। वेद का ईश्वर यदि पौराणिकों के ईश्वर की तरह क्रिया करता तो मुस्कराता और कहता- ये याचक न मुझे समझते है और न मेरी रचना, सृष्टि को। इस सम्पूर्ण सृष्टि, केवल यह पृथ्वी ही नहीं, चाँद-सितारे, असंख्य सूर्य, असंख्य आकाश गंगाएँ, इन सबका रचयिता, नियन्ता मैं, सर्वशक्तिमान, निराकार, परब्रह्म हूँ। समस्त जीवात्माओं से मेरा पिता-पुत्र का सम्बन्ध है-अतः मुझे सभी प्रिय है। इनके समस्त कार्य-व्यापारों का नियमन न्यायपूर्वक करता हूँ। ईश्वर के इस स्वरूप को न समझते हुए हम मांगते हैं-धन-दौलत, मोटर, मकान, पुत्र-पुत्री मुकदमें में जीत, शत्रु का विनाश, दैहिक प्रेम में सफलता आदि, आदि।

ईश्वर कहता है-सुख-समृद्धि और ये समस्त याचना की गई वस्तुओं को देने का एक मैकेनिज्म, एक विधि समस्त मानवों के लिए मैंने निर्धारित कर दी है। मेरे अनन्त वैभव से, अपार क्षमता से, सर्वशक्तिमान से तुम भर पूर लाभ-उठा सकते हो। लेकिन माध्यम वही तरीका होगा जिसे विद्वान लोग ''कर्मफल सिद्धान्त'' के रूप में निरूपित करते हैं और इसी सिद्धान्त के अनुसार तुम्हारे अनन्त जन्मों के, अनन्त पाप-पुण्यों के कर्मो के लेखे अनुसार जो तत्व शेष रहता है उसे ''प्रारब्ध'' के रूप में परिभाषित करते हैं। सौभाग्य ऐसी कुछ चीज नहीं है जिसे मैं कुछ को देता हूं और कुछ को नहीं देता।

महाकवि तुलसीदास का यह वचन सत्य नहीं है-''रहिए जिस विध राम रूचि राखा''। रचा तुमने है, कर्म तुमने किए है केवल फल का निर्धारण राम (परमात्मा) ने अपने पास सुरक्षित रखा है और उस कर्मफल-भाग्य के सहारे मनुष्य कैसे-कैसे नाच नाचता है। इस कर्मफल सिद्धान्त का नियमन परम दयालु परमात्मा अत्यन्त कठोर प्रतीत होने वाली न्याय प्रक्रिया द्वारा करता है।

मानव, तू मेरी रचना है। मैंने तुझे देह देकर सृष्टि के समस्त भौतिक सुखों का आनन्द लेने के लिए, मेरी रचना सामर्थ्य देखने के लिए तेरा निर्माण किया है पर तेरी यह देह भौतिक सुखों के उपभोग के अतिरिक्त और कुछ कर्म-सुकर्म करने के लिए भी दी है। दिए है तुझे कुल सौ वर्ष। भोगयोनि से पृथक करने के लिए ''बुद्धि'' दी है। तू मुझे, मेरी रचना को समझ। सत, चित्त से आनन्द की ओर अग्रसर करने के लिए ही यह

www.thearyasamaj.org



''धी'' तुझे दी है। तुझे स्वतः ज्ञान नहीं दिया, परन्तु समस्त ज्ञान-विज्ञान के भण्डार वेद तुझे उपलब्ध करा दिए हैं।

, तू अल्पज्ञ है, इसलिए मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तुझे, मुझसे क्या मांगना चाहिए। हे देहधारी मनुष्य। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर में तू सभी अन्य जीवधारियों के सदृश्य है। इनसे युक्त कार्य-व्यवहार में अन्य जीवधारियों से तुझमें रंचमात्र भी भेद नहीं रखा। इनसे जनित कामनाओं, वासनाओं की पूर्ति भी इन जीवधारियों के समान ही तू भी करेगा- पर तुझे दी है, बुद्धि, विवेक। यही अच्छे-बुरे कर्म का निर्णय करेगी। तेरी सहायता के लिए ही तो मैं तेरे हृदय स्थल में विराजमान हूँ। बुरा काम करने के पहिले चेतावनी दूंगा-भय, शंका, व लज्जा तेरे मन में उत्पन्न करूंगा-अच्छा काम-सत्कार्य करने पर तेरा मन आनन्द, आल्हाद से भर दूंगा। होगा यह क्षण मात्र में ही। मान या न मान तेरी मर्जी और इस प्रकार विवेक/अविवेक से किए गए कर्म, तेरा कर्मफल-भाग्य या दुर्भाग्य निर्धारित करेंगे और तदनुसार ही तुझे सुख-दु:ख मिलेंगे। इसलिए तुझे बताता हूं कि तू मुझसे क्या मांग- **1. धियो योनः प्रचोदयात्।, 2. दुरितानि परासुव। 3. उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।, 4. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्चन्तु मा कश्चित दुख भागभवेत्।, 5. द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं-शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषंधयः शान्ति। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रहा शान्ति सर्व शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरोधि।**

-सेवा निवृत वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र),
22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर,
ग्वालियर (म.प्र.)-474001


# दानदाताओं से निवेदन

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ प. न्यास द्वारा स्थापित शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रूखनगर, गुड़गांव में शीघ्र ही भव्य भवन निर्माण हो चुका है जिसमें आप अपने निकटतम सम्बन्धी के नाम का पत्थर लगवा कर उनकी स्मृति चिरस्थायी करवा सकते हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | अण्डरग्राउन्ड साधना हाल सत्संग भवन 30' x 62' | लागत | 21,00,000/- |
| 2. | धर्मार्थ चिकित्सालय, आधुनिक सुविधाओं से सुजज्जित 30' x 43' | लागत | 15,00,000/- |
| 3. | भव्य यज्ञशाला (उपासना मन्दिर) 30' x 30' | लागत | 11,00,000/- |
| 4. | दो कमरे बरान्डा, किचन, लैटरीन, बाथरूम सहित 12' x 10' एक कमरे की | लागत | 2,50,000/- |
| 5. | साधकों के लिए अण्डर ग्राउन्ड 6 कमरे 12' x 9' | लागत | 1,00,000/- |

आप सभी के पुनीत सहयोग से यह महती कार्य वैदिक संस्कृति प्रचार प्रसार में अग्रसर हो सकेगा और आप भी धार्मिक कार्य के पुण्य के भागी बनेंगे। 5100/- रूपये से अधिक का पवित्र दान देनेवाले का नाम दान दाताओं की स्वर्णिम सूची में अंकित किया जायेगा।

| | | |
|---|---|---|
| **सत्यानन्द आर्य (प्रधान)** | **दर्शन कुमार अग्निहोत्री (मंत्री)** | **स्वामी धर्ममुनि जी** |
| मो. 9313923155 | मो. 9810033799 | मो. 9813754084 |
| **ईशमुनि जी** | **राजहंस मैत्रेय आचार्य** | **विक्रमदेव शास्त्री** |
| मो. 9812640989 | मो. 9813754084 | मो. 9896578062 |

www.thearyasamaj.org



# औकात

**- अशोक सिसोदिया**

एक श्वान जो राह भूलकर, इक आबादी में आया,
सोच रहा था थोड़ा खाना, खाकर जाए सुस्ताया।
खाना पाने की चाहत में, कुत्ता जहाँ भी जाता था,
ढेरों कुक्कुर अपने पीछे, पीछा करते पाता था।

अपनी जान छुड़ाकर वो इक, रस्ते पर पहुँचा आकर,
देख स्वयं को पूर्ण सुरक्षित, साँस चैन की ली जाकर।
धूप कड़ी थी, भूख बड़ी थी, प्यास से था दम निकल रहा,
आती एक बैलगाड़ी को, बड़े ध्यान से तभी लखा।

उस गाड़ी के नीचे-नीचे, चलने लगा वो भूखा श्वान,
गर्मी से तो राहत पाली, मगर भूख से था बेजान।
तभी अचानक गाड़ी पर से, रोटी का टुकड़ा टपका,
भूख से व्याकुल उस कुत्ते ने, फौरन ही उसको लपका।

खाना पाकर के कुत्ते में, थोड़ी सी शक्ति आई,
गर्मी, धूप, भूख से उसने, राहत पा, ली अंगड़ाई।
पेट भरा तो भूल गया वो, कुक्कुर अपनी ही औकात,
जो भी घटा अभी कुछ पहले, भूल गया वो सारी बात।

लगा सोचने इस गाड़ी को, अपने ऊपर मैं लाया,
पर गाड़ी वाले ने अब तक, धन्यवाद न जतलाया।
नहीं उठाता अब मैं इसको, देखूँ कैसे जाएगा,
नहीं शुक्रिया किया है मेरा, उसका फल तो पाएगा।

ऐसा सोचा खड़ा हो गया, गाड़ी निकल गई आगे।
उसको देखा कुछ कुत्तों ने, सब उसके पीछे भागे।
जान बचाने को वो भागा, पर कुत्तों ने घेर लिया,
सबनें मिलकर चीरा फाड़ा, और वहीं पर ढेर किया।

जो भी उल्टा सोचा करता, भूला करता निज औकात,
उसके जीवन में घटती है, बच्चों! ऐसी ही कुछ बात।

# रवि की प्रथम किरण

**- जयदेव हसीजा 'प्रेमी'**

सो रहा था निद्रा में,
विचर रहा था सपनों के तमस में!
हुआ आभास जैसे 'नाक' हुई है मेरी खिड़की पर
मुन्दी मुन्दी आंखो दीखा एक अजनबी
चिलमन के पीछे शीशों पर पड़ी ओस की
अतीव सुन्दर प्रथम रश्मि थी रवि की
पूरी आंखे खोल दी मैंने
देखा मैंने, पहचाना मैंने नत्त-मस्तक होकर पूछा
कैसे पड़ी आपकी दिव्य दृष्टि आज मुझ नादान पर?
जागो! भोर भई! उत्तर दिया मुस्काते मुख्स से
जाग गया पूर्ण रूपेण, मलते मलते नयनों को अपने
छोड़ दिया निद्रा-पट मैंने, निकल पड़ा भ्रमण को
एक सुविकसित कुसुमभाकर में
किरणों के सूर्य की विस्तृत प्रकाश में
पड़ी नजर मुस्काते कुसुमों की नवोदित पंखड़ियों पर।
उमंग मन में प्रथम बार इक नूतन विचार
कब बनाता है रवि यह रंगा रंग के मुस्काते
लहराते नन्हें नन्हें यह स्वर्ण और रजत के पुष्प?
मैं तो उसे भी रात्रि में क्षितिज में सोया पाता हूं।


## आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

| | |
|---|---|
| यज्ञ समुच्चय | मूल्य : 50 रु. |
| वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त | मूल्य : 25 रु. |
| स्वस्थ जीवन रहस्य | मूल्य : 20 रु. |
| फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट | मूल्य : 20 रु. |
| आत्मशुद्धि के सरल उपाय | मूल्य : 15 रु. |
| विद्यार्थियों के लाभ की बातें | मूल्य : 15 रु. |
| वृहद् जन्मदिवस पद्धति | मूल्य : 20 रु. |
| चाणक्य-दर्पण | मूल्य : 25 रु. |
| कल्याण-पथ | मूल्य : 20 रु. |
| प्राणायाम-विधि | मूल्य : 10 रु. |
| स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय | मूल्य : 15 रु. |

**प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507**

**दूरभाष** : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

www.thearyasamaj.org



# हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आश्रम

1. मेनका अपने पति से बोली-तेरा दोस्त पप्पु जिस लड़की से शादी करना चाहता है वो लड़की बिल्कुल अच्छी नहीं है तुम उसे मना क्यों नहीं करते?

   मेनका का पति- मैं क्यों मना करूं, उसने क्या मुझे मना किया था।

2. सुरेश-नरेश से-यार नरेश कपड़ा कैसे बनता हैं और कपड़े से क्या-क्या बनता है

   नरेश-यार मुझे नहीं पता

   सुरेश- अच्छा जो तू ये पेंट पहन रहा है ये किस चीज से बनी है

   नरेश-ये पैंट तो मेरे पापा की पैंट में से बनी है।

3. राकेश जगदीश से-यार जगदीश तुने सुबह-सुबह अपने लड़के को इतना क्यों मारा, क्या बता हो गयी

   जगदीश-अरे कल इसका रिजल्ट आयेगा, और मुझे दो तीन दिन के लिए बाहर जाना है।

4. एक कंजुस पति को करंट लग गया

   पत्नी-आप ठीक तो है ना

   पति-मैं ठीक हूं तू मीटर देख कितना बढ़ा है

5. पप्पु-चप्पु से-चप्पु आज रक्षाबंधन है तू छिपता क्यों घुम रहा है।

   पप्पु-पप्पु जिन जिन को मैनें लैटर लिखा था वो मुझे ढुढंती घुम रही हैं।

6. एक लड़की कोक पी रही थी, अचानक उसमें से जूँ निकली। जूँ लड़की से बोली-मां

   लड़की-चूप कर मैं तेरी माँ नहीं

   जूँ-ऐसा न बोलो मैं तुम्हारे सर में से निकली हूं।

# चादर छोटी, पाँव लम्बे

- आर.पी. आनन्द

यह अपने आप में एक प्रश्न है कि जब चादर छोटी हो और पांव लम्बे हो तो क्या करना चाहिए। अज्ञानी पुरुष तो यही कहेगा कि पांव को काट देना चाहिए। परन्तु ज्ञानी पुरुष अपने विवेक से इसका उत्तर इस प्रकार देगा कि हमें अपने पांव को सिकुड़ लेना चाहिए अर्थात् हमारी इच्छायें इतनी अधिक है कि उन्हें पूरा करते हमारा सारा जीवन संसारिक विषयों में ही व्यतीत हो जायेगा। तो फिर ईश्वर का भजन, उपासना कब करेंगे और कैसे कर पायेंगे।

कहते हैं मानव तन बड़े शुभ कर्मो के पश्चात् ही मिलता है। यदि हम अपनी वासनाओं और इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही यह मानव जन्म खो दिया तो फिर मानव जन्म पाकर क्या पाया। किसी कवि ने बड़े सुन्दर शब्दों में मानव जीवन का वर्णन इस प्रकार किया है कि-

चली जा रही है यह जीवन की रेल,
समझकर खिलौना इसे तू न खेल,
कुशल कारीगर ने इसे है बनाया,
बड़ी अकलमन्दी से इसको चलाया,
पड़े इसके इंजन में कर्मो का तेल।

प्राणी इस संसार में अपनी मर्जी से नहीं आते। ईश्वर मानव को उसके शुभ कर्मो के अनुसार ही उसे अमीर या गरीब के घर में जन्म देता है। परन्तु हम प्राणी इस संसार में आकर अपने रहने के लिए महल गाड़ियां बना लेते है यह सोचकर कि अब हमें इस संसार को छोड़कर कभी नहीं जाना है। यह हमारा सदैव रहने वाला संसार है। मनुष्य यह भूल जाता है कि उसे किसी न किसी दिन मृत्यु का ग्रास तो बनना ही पड़ेगा क्योंकि मृत्यु का कोई समय निश्चित नहीं है। मृत्यु हमेशा और हरदम हमारे सिर पर मंडरा रही है। सासों का क्या भरोसा फिर आये या न आये। सामान सौ वरस का, पल की खबूर नहीं। इसलिए हमें सदैव ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करते रहना चाहिए। अपनी कामनाओं को, इच्छाओं को कम करना ही होगा। मन को एकाग्र कर ईश्वर में दृष्टि लगानी होगी तभी हम मोक्ष की प्राप्ति के हकदार हो सकते है। तभी हम अपनी आत्मा की तृप्ति कर सकते है जो हमारे जन्म का मुख्य लक्ष्य है।

www.thearyasamaj.org



# महामृत्युञ्जय मन्त्र

- राकेश कुमार

**त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम**
**उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।**

इस मन्त्र को आयुष्य की कामना होने पर, जन्मदिवस पर इसकी आहुतियां दिलाई जाती है और इसका जप भी किया जाता है।

मृत्युञ्जय का अर्थ मृत्युजयति यानि जो मृत्यु को जीत लेता है। मृत्यु को अपने वश में करके जीतना पर कोई भी व्यक्ति आजतक अमर नहीं रहा। सबसे पहले या देर से मरना ही है तो फिर मृत्यु को वश में कैसे किया जा सकता है। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं

**जातस्य हिं ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च**

अर्थात्- जो पैदा हुआ उसकी मृत्यु ध्रुव सत्य है और जो मर गया उसका जन्म भी ध्रुव सत्य है। एक अन्य वेद मन्त्र

**''ब्रह्मचर्येण तपसादेवा मृत्युमुपाघ्नत''**

इसमें कहा गया है कि देवताओं ने ब्रह्मचर्य और तप को हथियार बनाकर मृत्यु को ही मार डाला।

मृतयुञ्जय का अर्थ है कि असमय मृत्यु न हो। मनुष्य की आयु एक सौ वर्ष मानी जाती है और मन्त्र ''जीवेम शरदाः शतम'' के माध्यम से परमेश्वर से प्रार्थना भी की गई है कि हम सौ वर्ष जीयें। और मन्त्र में ''मृत्योमुर्क्षीय'' प्रार्थना की गई है कि मृत्यु से मुक्ति दिलाओ। मन्त्र के दो भाग है- 1. त्रयम्बंक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् हम त्रयम्बंक भगवान का यजन करते है कि त्रयम्बंक भगवान् सुगन्धि है और पुष्टिवर्धनम् पुष्टिको, पोषण को बढ़ाने वाले है। 2. उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतातः और प्रार्थना की गई है उर्वारूक (खरबूजे) की भांति बन्धन से मुक्त कीजिए। पाठको को यहां बताना उचित है कि जैसे खरबूजे को मुक्ति दी जाती है वैसे मुक्ति दीजिए। मा अमृतात का अभिप्राय यह है कि मुक्ति मृत्यु से दीजिए अमृत से नहीं।

त्रयम्बक के कई अर्थ है जीव, कारणरूप प्रकृति और कार्यरूप जगत की रक्षा करने वाला परमेश्वर। दूसरा अर्थ स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीर की रक्षा करने वाला परमेश्वर। तीसरा अर्थ पृथ्वी, अन्तरिक्ष और घौ तीनो लोकों में व्याप्त है और हमारी तीनो लोकों, तीनों शरीरों एवं तीनों जीव, जगत और प्रकृति से रक्षा करते है।

खरबूजा पुष्टि भी देता है एवं सुगन्ध भी। सुपक्व होकर सगुन्ध बिखेरता है अपनी डाली से अलग होता है। इसी तरह हम भी त्रयम्बक भगवान से प्रार्थना करते है कि हे प्रभु हम भी उसी प्रकार जैसे खरबूजा सुपक्व होकर सुगन्धित होकर डाल से अलग हो जाता है और उसकी सुगन्धि कीर्ति चारों ओर फैलती रहती है। हमारे जीवन की कीर्ति भी चारों ओर विस्तृत होती रहे।

प्रश्न उठता है कि क्या कोई तीर्थ या भगवान का नाम लेने का कोई अन्य तरीका भी है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि है। वेदों और शास्त्रों का अध्ययन करना एवं पढ़ाना, उचित व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध, लोक उत्थान बढ़ाना, सदाचारी जीवन, योग का अभ्यास, मलीनता एवं ढोंग से स्वतन्त्रता, शब्दों कार्य एवं विचारों में सच्चाई, ब्रह्मचर्य का पालन, अपने पिता, माता एवं आचार्य और शिक्षित अतिथियों का आदर, परमात्मा की पूजा, मानसिक शान्ति, इन्द्रियों पर निग्रह, भद्र कार्य, ज्ञान का ग्रहण (संसारिक एवं अध्यात्मिक) और अन्य अच्छे गुण और इस प्रकार के सभी उत्तम कार्य तीर्थ कहलाते हैं क्योंकि यह हमें दुःखों के सागर को पार करवाने में सहायक है। भूमि और जल कभी भी तीर्थ नहीं हो सकते। क्योंकि वही जो हमें दुःखों के सागर से पार करवाते है तीर्थ कहलाते है। भूमि और जल में ऐसा गुण है ही नहीं। दूसरे रूप में पानी में तो व्यक्ति डूब भी सकता है। नाव या जहाज को तीर्थ कहा जाता है क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति नहीं या समुद्र पार कर सकता है। वे ब्रह्मचारी जो एक ही अध्यापक से और एक ही पुस्तक पढ़े हो वे एक ही तीर्थ को प्राप्त है।

अन्न एवं अन्य पदार्थ उनको दिए जावे जो वेदो एवं शास्त्रों का अध्ययन करे और जिनकी वाणी में ऐसी सच्चाई जो उनकी सभ्य जीवन को प्रदर्शित करती हो और फिर दानी लोग ऐसे लोगो से खुद शिक्षा

www.thearyasamaj.org



ग्रहण करे। यही यजर्वेद भी कहता है कि ऐसे लोग तीर्थ के पात्र है। जहां तक परम पिता का नाम लेने का सम्बन्ध है। यजुर्वेद में कहा गया है कि यदि सच्चे अर्थो में उस महान प्रभु का नाम लेना चाहते हो तो शुभ कर्म करने चाहिए।

परमात्मा को सौ नामों से जाना जाता है (जैसे कि ब्रह्म परमेश्वर, ईश्वर, न्यायकारी, दयालु, सर्वशक्तिमान इत्यादि) क्योंकि उसमें कई प्रकार के गुण एवं अच्छाईयां हैं। उसे ब्रह्म इसलिए कहा जाता है कि सबसे महान् है। परमेश्वर इसलिए कि वे सब शक्ति शालियों का मालिक है, ईश्वर इसलिए की वह सर्वशक्तिमान है, न्यायकारी इसलिए कि वह नया तुला है और अन्यायी नहीं है। दयालु इसलिए कि वह सब पर दया करता है। सर्वशक्तिमान् इसलिए है कि वह सृष्टि का निर्माण और पालना करना और उसको संहार केवल अपनी ही शक्ति से और किसी अन्य की मदद नहीं लेता है। विष्णु इसलिए कि वह सबमें मौजूद और सबकी रक्षा करता है उसे महादेव इसलिए कहा जाता है कि वह देवों का भी देव है। (देव कोई भी भौतिक या आदि दैविक वस्तुएँ जिनमें आकर्षण या लाभकारी गुण हो देव ऋषि, महात्मा और बुद्धिमान, व्यक्ति भी हो सकते है। रूद्र इसलिए कि वह इस सृष्टि के संहार का कारण भी है। इसलिए मनुष्य को यह प्रेरणा दी जाती है उसके गुणों को ग्रहण करे। तात्पर्य यह हुआ कि व्यक्ति अपने महान् कार्यो से महान बने और सभी शक्तिशालियों में शक्तिशाली हो और अपनी शक्ति का सदुपयोग करे और कभी भी दुष्ट कार्य न करे और सभी पर दयालु रहे। अपने उन्नति के साधनों को पूर्ण कर ले। उसको तकनीकी कला सीख लेनी चाहिए और उसके साथ अन्य चीजों का निर्माण करे और सभी की सुरक्षा करे। उसको विद्वानों में विद्वान होना चाहिए। वह कुशलतापूर्वक दुष्टों को सजा दे और अच्छे व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करे। संक्षिप्त में अपनी प्रकृति और चरित्र को परमात्मा के गुणों के अनुकूल सुधार करने के पश्चात ही उसका नाम लेने का एक अच्छा तरीका है।

- 1088, सैक्टर-46, फरीदाबाद (हरियाणा)

# बे नाम शहीदों के लिए

- शीलचन्द बहादुरगढ़

कलम आज उनकी जय बोल
जली अस्थियां बारी बारी
छिटकायी जिसने चिंगारी
जो चढ़ गये पुष्प वेदी पर
लिये बिना गर्दन का मोल।।
कलम आज उनकी जय बोल

जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक सहारे
जल-जल कर बुझ गये किसी दिन
मांगा नहीं स्नेह मुंह खोल।।
कलम आज उनकी जय बोल

पीकर जिनकी लाल शिखाए
उगल रहीं लू लपट दिशाएं
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल।।
कलम आज उनकी जय बोल

अन्धा चका चौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा
साखी है उनकी महिमा के
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल।।
कलम आज उनकी जय बोल


## आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दु:ख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शांति, प्रेम करूणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

–राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

www.thearyasamaj.org



# हिन्दी दिवस दिनांक 14.09.2013

-इन्द्र देव

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को स्वतन्त्र भारत की राष्ट्र भाषा बनाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया किन्तु अंग्रेजी को 26 जनवरी 1965 तक राष्ट्रभाषा के रूप में बनाए रखने की सहमति दी। अहिन्दी भाषी प्रदेशों के नेता भी सहमत थे। चूंकि हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए सभी स्तरों पर अच्छे ढंग से प्रयास ही नहीं किए गए इसलिए दक्षिणी राज्यों के दबाव में आकर नेहरू सरकार ने अंग्रेजी को अनिश्चित काल के लिए देश की सहराष्ट्र भाषा का दर्जा कानून बनाकर दे दिया। देश में 28 राज्य हैं, जिनमें हिन्दी भाषी राज्यों की संख्या नौ है। बिहार-झारखण्ड तथा उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राज भाषा का दर्जा दे दिया गया है।

महाराष्ट्र में राज ठाकरे तथा उद्धव ठाकरे के दल हिन्दी भाषियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं जो निन्दनीय हैं क्योंकि वीर सावरकर आदि सदैव हिन्दी के प्रबल समर्थक रहे हैं और देश का महात्मा गांधी अन्तराष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय 1997 में राज्य के वर्धा शहर में खोला गया।

पिछले कई वर्षो से यह देखने में आ रहा है कि हिन्दी भाषी राज्यों में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों व कॉलिजों की बाढ़ सी आ गई है। मध्यम वर्ग-उच्च सरकारी कर्मचारी तथा सम्पन्न व्यापारियों के बच्चों को अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों-कॉलिजों में ही पढ़वाया जा रहा है इसलिए उ.प्र. हाई स्कूल व इन्टरमीडिएट शिक्षा बोर्ड ने भी अंग्रेजी माध्यम से भी परीक्षा लेने की व्यवस्था की है।

उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा हिन्दी प्रदेश है। मुलायम सिंह हिन्दी के प्रबल समर्थक हैं किन्तु हिन्दी प्रेमियों-समर्थकों का कोई बड़ा अथवा प्रभावशाली संगठन नहीं है इसलिए यहां अंग्रेजी-उर्दू को बढ़ावा देने का कोई विरोध नहीं होता है। राज्य में देवबन्द-अलीगढ़ में उर्दू अरबी-फारसी को बढ़ावा दिया जाता रहा है अब केन्द्र सरकार अलीगढ़ विश्वविद्यालय की 5 शाखाएं अन्य राज्यों में खोल रही है जहां इन्टर-बी..में उर्दू पढ़ना अनिवार्य है। सरकारी पैसों से मुलायम सिंह ने रामपुर में और मायावती ने लखनऊ में विश्वविद्यालय बनवाए हैं जहां उर्दू-फारसी-अरबी को महत्व दिया जाएगा। इन चारों विश्वविद्यालय में हिन्दी को कोई स्थान नहीं मिलेगा। अत: हिन्दी का भविष्य उज्जवल नहीं है इसलिए हिन्दी प्रेमी समर्थक संगठित होकर राज्य के अहिन्दी करण को रोकें।

# हृदय रोगियों को विशेष संकेत

1. हृदय रोगियों को धूल और धूएं से बचना चाहिए।
2. पेट को साफ रखो अर्थात् आंतो में मल जमा नहीं रहना चाहिए। पानी खूब पीएं ताकि मल जमा न हो।
3. भोजन तरल रेशेदार ताजा खायें। शुष्क गरिष्ठ भोजन ना खायें। फलों सब्जियों का रस सेवन करें। तले हुए पूरी-कचौड़ी-पकौड़े समोसा इत्यादि न खाये तो अच्छा है।
4. नमक, चीनी और मेदा इन तीन सफेद विषों का कम मात्रा में प्रयोग करें।
5. चिन्ता (तनाव), चिन्ता छोड़ कर चिन्तन करें। तनाव मुक्त रहने के लिए सकारात्मक विचार रखो।
6. रक्तचाप (ब्लड प्रेशर)- रक्त दबाव को घटने बढ़ने मत दो। हाई और लौ दोनों प्रकार के रक्त-चाप हानिकारक हैं। तनाव के कारण या मीठा तल पदार्थ खाने से बढ़ता है।
7. भार (वजन) अपने शरीर के वजन को आयु और लम्बाई के अनुसार स्थिर रखो। वजन को सही रखने के लिए अपनी शक्ति के अनुसार व्यायाम करें। प्रात: सायं भ्रमण करना सब से उत्तम व्यायाम है।
8. कोलेस्ट्रोल की मात्रा शरीर में बढ़ने मत दो। इसको सामान्य रखने के लिए अधिक घी तेल वाले पदार्थ मत खाओ। अंग्रेजी में हर्ट प्रेशेन्ट के लिए कहा है-Do not worry. Donot hurry and Do not curyy.

-देवराज आर्य

www.thearyasamaj.org



# मृतक श्राद्ध बनाम पितृयज्ञ

-आचार्य उमाशंकर शास्त्री

मृतक श्राद्ध' शब्द वेदों में कहीं भी नहीं है अपितु यह पीछे की कल्पनामात्र है। जिससे भोले-भाले हिन्दुओं को मूर्ख बनाकर अपनी स्वार्थ सिद्धि की जा सके। इस विचारधारा को हिन्दुओं के लिए अनिवार्य बनाने के लिए पुराणों की रचना की गई तथा रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में इस विचार से संबंधित श्लोकों की रचना कर प्रक्षिप्त किया गया तथाकथित पोपों (ब्राह्मणों) द्वारा।

प्रथम तो श्राद्ध शब्द जीवितों पर ही प्रयुक्त हो सकता है, मृतकों पर नहीं क्योंकि 'श्रत्' नाम सत्य का है और जिसमें 'श्रत्' विद्यमान हो वह श्रद्धा है। अर्थात् जो श्रद्धापूर्वक पितरों की सेवा की जावे उसी का नाम श्राद्ध है। सेवा जीवितों की ही हो सकती है, मृतकों की नहीं। अत: जीवितों का ही नाम पितर है, मृतकों का नहीं। पितर शब्द जीवितों के लिए ही प्रयुक्त हो सकता है मृतकों के लिए नहीं क्योंकि हमारे लिए जो माता-पिता, भाई-बहन के संबंध हैं, वे शरीरों के साथ है जीवों के साथ नहीं क्योंकि 'जीव' अनादि तथा 'जीव' अनादि तथा अनुत्पन्न है। गीता के अनुसार ''न जायते म्रियते वा कदाचित''- गीता 2.20 जीव कभी भी न पैदा होता है न मरता है। ''वांसांसि जीर्णानि यथा विहाय''-गीता 2.23 अर्थात् जैसे हम पुराने कपड़ों को छोड़कर नये कपड़े पहनते हैं, वैसे ही जीव पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेता है। जब जीव शरीर से निकलकर कर्मानुसार दूसरे जन्म में चला जाता है और शरीर को फूंक दिया जाता है फिर कौन 'पितर' शेष रहता है? यदि यह मान लिया जाये कि मरने के बाद भी ''माता-पिता'', भाई-बहन' के सम्बन्ध बने रहते हैं, तो पुनर्जन्म में माता का पुत्र से, बहन का भाई से, बेटी का बाप से विवाह होना संभव हो जायेगा। महाभारत (शान्ति पर्व अध्याय 28) के अनुसार जैसे महासागर में लकड़ियां आपस में मिल जाती हैं और आपस में विछुड़ जाती हैं, वैसे ही जीवों का परस्पर समागम है। इससे सिद्ध होता है कि मरने के पीछे जीवों से माता-पिता आदि का सम्बन्ध शेष नहीं रहता। जीवितों के साथ ही माता-पिता आदि का सम्बन्ध है। निरुक्त खण्ड-11 के अनुसार ''पिता वा पालयिता वा जनयिता'' अर्थात् रक्षा करने वाले और पैदा करने वाले को पिता कहते हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण ने पांच मनुष्यों को पिता की संज्ञा दी है-

**''अन्नदाता, भयत्राता, पत्नीतातस्तथैव च।**
**विद्या दाता जन्मदाता पञ्चैते पितरो नृणाम्॥''**

अर्थात् अन्न देने वाला, भय से तारने वाला, स्त्री का पिता, विद्या देने वाला तथा जन्म देने वाला इन पांच मनुष्यों को पिता कहते हैं। इन समस्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि पितर शब्द जीवितों के लिए ही हो सकता है, मृतकों के लिए नहीं। अत: जीवित पितरों की श्रद्धापूर्वक सेवा करने का नाम ही श्राद्ध है। वेद मन्त्र भी 'मृतक श्राद्ध' की पुष्टि नहीं करता। मृतक श्राद्ध के समर्थन में पौराणिकों ने कुछ श्लोक बनाकर मनु-स्मृति में प्रक्षिप्त का अवैदिक विचार थोपने का प्रयत्न किया है जैसे-**''निमन्त्रिताहि- पितर उपतिष्ठन्ति तान् द्विजान्। वायु वच्चानुगच्छनित तथा सीनानुपासते।''** मनु 3.189 अर्थात् निमंत्रित पितर ब्राह्मणों के साथ-साथ वायुभूत होकर आते हैं और ब्राह्मणों के साथ बैठकर भोजन करते हैं। मृतकों की जब पितर संज्ञा होती ही नहीं तथा 'पितरलोक' नाम से कोई भिन्न स्थान नहीं है तथा पौराणिकों द्वारा मिथ्या कल्पित कोई विशेष पितर योनि नहीं है अपितु 'जीव' वर्तमान शरीर को छोड़ते ही कर्मानुसार दूसरे शरीर को प्राप्त हो जाता है। गरुड़ पुराणानुसार-जैसे घास की सूंडी तभी पीछे से दूसरा पांव उठाती है, जब अगले पावों की दृढ़ स्थिति हो जाती है, वैसे ही जब जीव शरीर छोड़ता है, उसका दूसरे शरीर सम्बन्ध हो जाता है। जैसे मनुष्य घर के जल जाने पर वह नये घर में प्रवेश करता है वैसे ही जीव भी देह के नाश होने पर दूसरी देह धारण करता है। गरुड़ पुराण में ही प्रेतखण्ड अध्याय 3 में चार

www.thearyasamaj.org



प्रकार के शरीरों का वर्णन है। **''उद्भिजा: स्वेदजाश्चैव अण्डजाश्च जरायुजा''** इनमें पितर या प्रेतयोनि का नाम भी नहीं है। अत: न पितरयोनि होती है और न कोई और 'पितर लोक' है और न कोई 'पितरयोनि' में जाता है। यह सब पोप पाखण्ड है। जब कोई पितरयोनि ही नहीं तो फिर पितरों का निमंत्रित होना, ब्राह्मणों के पीछे फिरना तथा उसके साथ खाना खाना ही मिथ्या सिद्ध हो गया। यदि पितर निमन्त्रित ब्राह्माणों के पीछे-पीछे रहना पड़ता होगा। यदि पितर भोजन करते हैं तो प्रश्न उठता है ब्राह्मणों से पहले भोजन करते हैं या पीछे अथवा साथ ही। यदि पितर पहले भोजन करते हैं तो ब्राह्मण जूठा खाते हैं और ब्राह्मण पहले भोजन करते हैं तो पितर जूठा खाते हैं। यदि दोनों साथ-साथ खाते हैं तो दोनों जूठा खातें हैं और यह ध र्मशास्त्र के विरूद्ध है।

**'नोच्छिष्टं कस्याचिद्दद्यान्नाघाच्चैव तथान्तरा'**- मनुस्मृति 2.56 अर्थात् न किसी को जूठा दें न किसी के साथ इकट्ठा खायें। अत: तार्किक और धार्मिक दोनों ही दृष्टिकोण से 'मृतक श्राद्ध' के नाम पर पितरों का श्राद्ध ब्राह्मणों को खिलाकर करना गलत सिद्ध होता है। मनु भगवान के अनुसार पितरों को प्रसन्न करने के लिए ''अन्नादि, उदक, दूध, मूल, फल आदि से प्रतिदिन श्राद्ध करें'' तो फिर केवल आश्विन के 15 दिनों में और उनमें भी एक, पितर के लिए एक दिन श्राद्ध करते हैं। इन सभी मिथ्या परिकल्पानों से ऊपर उठकर मृतक श्राद्ध के नाम पर फैलाये गयी अवैदिक परम्परा को समाप्त कर हमें वैदिक विचारधारा के अनुसार 'पितृयज्ञ' करना चाहिए, जिससे समाज और राष्ट्र को सही दिशा-निर्देश मिल सके।

अब हम पितृयज्ञ की अनिवार्यता एवं परम्परा पर विचार करते हैं-''वैदिक काल में हमारे यहां वर्णाश्रम व्यवस्था पूर्णरूपेम लागू थी। अवस्था ढलने की स्थिति में लोग वानप्रस्थ लेकर वनों में जाकर स्वाध्याय, साधना, तप के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर योग साधना द्वारा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते थे। समय पर संन्यास की दीक्षा लेकर संसार के कल्याण के लिए पूर्ण समर्पित रहते थे, यही हमारे पितर हुआ करते थे, जो आषाढ़ मास प्रारंभ होने पर अपने-अपने परिजनों के परिवार में आना प्रारंभ करते थे। श्रावण मास पर्यन्त अपने ज्ञान-तप-साधना से प्राप्त वैदिकज्ञान तथा व्यवहारिक ज्ञान का प्रवचन अपने परिजनों के बीच करते थे तथा अपने-अपने पितरों द्वारा प्राप्त ज्ञान को जीवन में धारण कर अपने जीवन की दिशा और दशा सुधारते थे, समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए पुरुषार्थ किया करते थे। श्रावण पूर्णिमा के दिन विशाल महायज्ञ के साथ ही ज्ञान यज्ञ की वार्षिक पूर्णाहुति के साथ ही सभी भद्रता को प्राप्त होते थे। 'भाद्रपद' मास तक पितर लोग परिवार और समाज की समीक्षा करते थे कि इनमें कितनी भद्रता आई हैं? फिर आश्विन मास के प्रथम पक्ष में पितरों की विदाई हुआ करती थी जिसे 'पितृपक्ष' संज्ञा प्रदान की जाती थी। विदाई में पितरों को भोजन के अतिरिक्त वर्ष भर के लिए वस्त्र, छाता-जूता, खाट-गद्दे आदि देकर विदा करते थे। वास्तविक 'पितृयज्ञ' इसी प्रकार हमारे सम्पूर्ण आर्य्यावर्त में हुआ करता था।

आज इस वैदिक स्वरूप को ''मृतक श्राद्ध एवं पितरपक्ष'' का नाम पर पोप पाखण्डियों ने लूट मचा रखी है। हमें इन पोप पाखंडियों से सावधान रहकर मृतक श्राद्ध को छोड़ सही मायनें में जीवित पितरों की सेवा कर 'पितृयज्ञ' के द्वारा पितरों के प्रति श्रद्धा रखकर पितरों का सम्मान करना तथा दिशाभ्रमित लोगों को भी सच्चे 'पितृयज्ञ' के प्रति प्रेरित करना है। समाज में व्याप्त मृतक श्राद्ध जैसे वैचारिक प्रदूषणों को छुड़वाकर वैदिक पितृयज्ञ को मानना मनवाना हम सभी का उत्तरादायित्व व परम कर्त्तव्य है ताकि सत्य को ग्रहण कर तथा असत्य को त्यागकर हम सभी ऋषि-ऋण से उऋण हो सकें।

-आर्य सदन, भागीरथ पथ, पुराना बाजार, तेघड़ा, बेगूसराय-851133 (बिहार)


## आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

| बैंक | नाम व खाता संख्या | बैंक कोड संख्या |
|---|---|---|
| इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर | आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471 | IFSC-A0211948 |

www.thearyasamaj.org



# आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

## अन्न एवं अन्नार्थ प्राप्त दान

| | |
|---|---|
| मैसर्स ग्रुप टीच इन्डस्ट्रीज एम.आई.ई. बहादुरगढ़ | 21000/- |
| श्री संदीप दहिया सुपुत्र राजसिंह दहिया टीचर कॉलोनी, बहा. | 12000/- |
| श्री महावीर जी बत्रा, आदर्श नगर, दिल्ली | 5100/- |
| श्री सुरेन्द्र कुमार जी गुप्ता, रोहिणी दिल्ली | 3100/- |
| श्री रवि कुमार अन्जनि प्रोपर्टीज हुड्डा मार्किट, बहादुरगढ़ | 3100/- |
| महावीर प्रसाद जी सेहरी वाले अग्रवाल कॉलोनी, बहा. | 3000/- |
| बलवान सैनी, जगवीर सैनी, देवेन्द्र सैनी, बहादुरगढ़ | 2100/- |
| श्री आनन्द गुप्ता जी, शालीमार बाग, दिल्ली | 2100/- |
| श्री वीरेन्द्र जी आर्य, दौलताबाद | 2100/- |
| आर्य समाज श्रद्धानन्दपुर, गुड़गांव, हरियाणा | 2100/- |
| बजाज परिवार विकासपुरी, दिल्ली | 2000/- |
| मूर्ति देवी मलिक जीवन ज्योति हस्पताल, बहादुरगढ़ | 1500/- |
| श्री सुरेन्द्र राठी सुपुत्र श्री राणा राठी, बहादुरगढ़ | 1500/- |
| श्री हेजल बरेजा, मदनपुर रोड, गुड़गांव, हरियाणा | 1500/- |
| श्री हरीश बजाज, बहादुरगढ़ | 1200/- |
| श्री मुकेश कुमार, सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 1200/- |
| दी शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री मन्जीत जी दी शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री शिव मन्दिर नूना माजरा | 1100/- |
| श्री दीनबन्धु पब्लिक स्कूल, घेवरा, दिल्ली | 1100/- |
| श्री देवेन्द्र सिंह लढ़वाल शास्त्री नगर, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्रीमती सुमित्रा देवी जी आर्या सोनीपत | 1100/- |
| श्री राजपाल सुपुत्र श्री रामकरण नूना माजरा, झज्जर | 1100/- |
| श्री चन्द्रभान जैन बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री बसन्त कुमार टांडा, डी.एल.एफ, गुड़गांव | 1100/- |
| आयुष्मान कर्ण सुपुत्र अनिल जी मलिक, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| दी श्री श्याम टेम्पो पिक अप यूनियन, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्रीमती रामदुलारी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़ | 1000/- |
| श्री अशोक छिकारा बहादुरगढ़ | 800/- |
| श्री सुमित बंसल जी अनाजमण्डी, बहादुरगढ़ | 600/- |
| श्री सत्यवीर सिंह जी दलाल सुपुत्र श्री रूपचन्द जी बहादुरगढ़ | 501/- |
| श्री रमीकेश जी गढ़ी, सांपला | 501/- |
| श्री ईश्वर सैनी, जगबीर सैनी, बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्री राजपाल जी यादव, नांगलोई | 500/- |
| श्री भूराज जी सुपुत्र पं. जयभगवान जी आर्य झज्जर | 500/- |
| आयु. चयनिका चौधरी, सैक्टर-4, गुड़गांव | 500/- |
| श्री वीरेन्द्र नरूला, झज्जर | 500/- |
| आयुष्मती पूजा, उत्तमनगर, दिल्ली | 500/- |
| श्री कृष्णा चड्डा, टैगोर गार्डन, दिल्ली | 500/- |

## विविध वस्तुएं

| | |
|---|---|
| श्री उमेद सिंह डरोलिया काठमण्डी, बहादुरगढ़ | 2 क्विंटल चावल |
| श्री दीपक छिकारा सुपुत्र श्री रूपचन्द छिकारा, बहादुरगढ़ | 150 किलो गेहूं |
| राजीव गुप्ता नजफगढ़ वाले द्वारा महात्मा लाल दास जी कबीर आश्रम, लाईनपार, बहादुरगढ़ | 150 किलो चावल |
| श्री भूपसिंह जी डबास, शनि मन्दिर, दिल्ली | 2 पीपा तेल |
| श्रीमती ज्ञान गोगिंया पश्चिम बिहार, दि. | 64 शर्ट, 38 पैंट, 46 जोड़े जुराब |
| श्री अत्तर सिंह जी राठी, 7 विश्वा, बहादुरगढ़ | 1 टीन घृत |
| श्री रोहित, बहादुरगढ़ | 10 किलो गेहूं |
| फरिश्ता एण्ड चरखा सौंप, दिल्ली | 2 पेटी साबुन |

## गौशाला हेतु प्राप्त दान

| | |
|---|---|
| श्री उमेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़ | 1 क्विंटल चावल, 50 किलो दलिया |
| बजाज परिवार, विकासपुरी, दिल्ली | 500/- |
| श्री अभिषेक छिकारा, धर्मविहार, बहादुरगढ़ | 2100/- |
| श्री हरिओम मौहल्ला, झील, बहादुरगढ़ | 1000/- चारे के लिए |
| श्री आनन्द पाल सुपुत्र श्री नौरंग सिंह, दिल्ली | 87 किलो दलिया |
| श्री जीतेन्द्र कुमार धर्माजा, बहादुरगढ़ | 501/-, 41 किलो शक्कर, 41 किलो आटा, 41 किलो खल सरसों |
| सतगुरु मार्बल बराही रोड, बहादुरगढ़ | 500/- |
| रोहतास तहलान धर्मविहार, बहादुरगढ़ | 1 क्विंटल गेहूं |
| उपकार यादव, बहादुरगढ़ | 85 किलो दलिया, 12 किलो गुड़ |

## भोजनार्थ प्राप्त दान

| | |
|---|---|
| श्री बृजलाल जी सहगल | एक समय का विशिष्ट भोजन |
| श्री वीरेन्द्र जी आर्य, दौलताबाद, गुड़गांव | एक समय का विशिष्ट भोजन |
| कबीर आश्रम, लाईनपार, बहादुरगढ़ | एक समय का विशिष्ट भोजन व बच्चों में साबुन वितरण |
| श्री अशोक जी नागपाल झज्जर | एक समय का विशिष्ट भोजन |
| श्रीमती शबनम जून, बहादुरगढ़ | एक समय का विशिष्ट भोजन |
| श्री राजेश राठी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | एक समय का विशिष्ट भोजन |
| श्रीमती सन्तोष कुमार पत्नी श्री दधीचि ऋषि वत्स पार्दु वाले महावीर पार्क, बहादुरगढ़ | एक समय का विशिष्ट भोजन |
| स्व. भगवानी देवी बजाज विकासपुरी, दिल्ली परिवार द्वारा | एक समय का विशिष्ट भोजन |

**मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 सितम्बर 2013 को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

www.thearyasamaj.org

## अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रुखनगर
## के छठे स्थापना दिवस समारोह पर सम्मानित करते हुए।

www.thearyasamaj.org

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

सितम्बर 2013

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

## अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रुखनगर के छठे स्थापना दिवस समारोह की सुन्दर झलकियां